

# सेवा समर्पण

मूल्य  
₹ 20

वर्ष-41, अंक-09, कुल पृष्ठ-36, ज्येष्ठ-आषाढ, विक्रम सम्वत् 2081, जून, 2024

## लोकमाता अहिल्या बाई होलकर



# पाठकों से निवेदन

प्रिय पाठको!

इन दिनों यह अनुभव हम और आप प्रतिदिन कर रहे हैं। हर वस्तु का मूल्य बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। चाहे रोजमर्रा का सामान हो या लिखने-पढ़ने की सामग्री-हर चीज की कीमत कई गुनी बढ़ चुकी है। कागज महंगा हो गया है, छपाई महंगी हो गई है। पिछले दो-तीन माह से पत्रिका रंगीन छप रही है। स्वाभाविक रूप से इन सबका असर आपकी लोकप्रिय पत्रिका 'सेवा समर्पण' पर भी पड़ रहा है। किन्तु पाठकों ध्यान में रखते हुए 'सेवा समर्पण' के मूल्य में पिछले काफी समय से कोई वृद्धि नहीं की गई। सुचारू रूप से चलाने के लिए पर अब लग रहा है कि यह आवश्यक है। इसलिए अब एक अंक का मूल्य 20 रु., वार्षिक 200 रु. एवं आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रु. किया जा रहा है। यह वृद्धि अप्रैल, 2024 के अंक से लागू होगी।

आशा है सुधी पाठक पूर्व की तरह आगे भी अपना अमूल्य सहयोग देते रहेंगे।

— सम्पादक

## सेवित से सेवक की ओर

नितिन गुप्ता जब कक्षा 11 में पढ़ते थे तब हमारे ऑनलाइन प्रकल्प 'टीन्स फॉर सेवा' से सेवितजन के रूप में जुड़े। 2 साल तक स्वयंसेवकों से ऑनलाइन कक्षा लेते रहे। इन्होंने कई ऑनलाइन प्रतियोगिता में भी भाग लिया। दिल्ली प्रांत की ओर से एक बार करियर काउंसलिंग कार्यक्रम किया गया। इसमें नितिन भी आए और प्रांत अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल जी से भी मिले। अग्रवाल जी को नितिन से मिलकर बहुत खुशी हुई। नितिन अब कॉलेज में पहुंच चुके हैं और सेवा भारती के 'टीन्स फॉर सेवा' में अब



स्वयंसेवक के रूप में जुड़कर सेवा भारती को अपनी सेवाएं दे रहे हैं। नितिन में बहुत सेवा और भक्तिभाव है। समय-समय पर अपने कॉलेज की ओर से सामाजिक कार्यों में भाग लेते रहते हैं। हाल ही में नितिन ने पूर्वी विभाग के शाहदरा जिले

में सामूहिक विवाह में मंच संचालन भी किया है। उनका मंच संचालन इतना अच्छा था कि समारोह में आए कई दानदाताओं और अतिथियों ने उन्हें पुरस्कार भी दिया। इतना ही नहीं, नितिन अपनी एक टीम के साथ सेवा भारती की स्मार्ट क्लास में भी जुड़ने वाले हैं जिसमें वे बस्ती के बच्चों को पढ़ाया करेंगे। भविष्य के लिए नितिन को अनेक शुभकामनाएं। आशा करती हूं वे सेवा भारती से इसी तरह जुड़े रहें। नितिन के कार्य उनकी पीढ़ी के लिए एक प्रेरणादायी संदेश है। □

—नीतू शर्मा

## मधुबनी पेंटिंग पर कार्यशाला

गत 29 मई को हंडगवार भवन कैलाश नगर में मधुबनी पेंटिंग की कार्यशाला हुई, जिसे रजनी किरण जी ने लिया। रजनी किरण जी राष्ट्रीय स्तर की कलाकार हैं। कार्यशाला में कुल 35 संख्या रही। इसमें रजनी जी ने मधुबनी आर्ट ब्लॉक प्रिंटिंग कैलोग्राफी के बारे में बताया और सभी से डिजाइन बनवा कर 6 प्रतिभागियों का चयन किया, जिन्हें वे अपने इंस्टीट्यूट में निशुल्क प्रशिक्षण देंगी। इसमें जिले और विभाग के कार्यकर्ताओं, शिक्षिकाओं ने भी भाग लिया। विभाग से रुचि जी और जिले से पंकज जी सविता जी रहे। कार्यशाला 4 घंटे रही।





3



संरक्षक  
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता  
डॉ. राम कुमार

सम्पादक  
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय  
सेवाकुंज, 13, भाई वीर  
सिंह मार्ग, गोल मार्केट,  
नई दिल्ली-110001  
दूरभाष: 23345014/15  
E-mail:  
info@sewabhartidelhi.org  
Website:  
www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा  
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये  
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

## सेवा समर्पण

वर्ष-41, अंक-09, कुल पृष्ठ-36, जून, 2024

### विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
संपादकीय		4
कर्तृत्व क्षमता की प्रतीक : अहिल्या बाई	मोहनराव भागवत	6
शरणार्थियों का सपना साकार	प्रतिनिधि	7
विस्थापन की व्यथा	इन्दिरा राय	9
सीबीएसई उड़ान योजना: लड़कियों के लिए...	अनुष्का नागपाल	12
राजपूतों की शान : आचार्य राघवेन्द्र	भारती बंसल	13
जल संरक्षण की सीख	आचार्य अनमोल	14
भारतीय योग साधना- विश्व कल्याण की ओर	भूषण लाल पाराशर	16
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी	आचार्य मायाराम पतंग	20
कविता : नयन निहारें	सरोजिनी चौधरी	21
बच्चों को उत्तम बाल-साहित्य सौंपिए	गंगा प्रसाद 'सुमन'	22
देश सेवा में लगा है सेवाधाम	प्रतिनिधि	23
अल्पायु में बड़े-बड़े काम		27
महाराणा प्रताप जयंती के कार्यक्रम		28
आत्म दीपो भव	इंदिरा मोहन	32

### पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,

13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org



# तीसरी बार, मोदी सरकार



**भ**ले ही इस बार के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को स्वयं का बहुमत नहीं मिला, लेकिन राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को स्पष्ट जनादेश प्राप्त हुआ है। राजग के नेता हैं श्री नरेंद्र मोदी। इस नाते वे तीसरी बार लगातार प्रधानमंत्री बनेंगे, इसमें कोई दो मत नहीं है। इससे पहले पं. जवाहरलाल नेहरू ही तीन बार प्रधानमंत्री बने थे। लगभग छह दशक के बाद यह संयोग आया है कि लगातार दो बार प्रधानमंत्री रहने के बाद भी श्री मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बन रहे हैं। आज की राजनीति जिस तरह से हो रही है, उसमें यह कोई छोटी बात नहीं है। 10 वर्ष तक सरकार चलाने के बाद भी भाजपा को 240 सीटें मिली हैं, यह भी

कोई छोटी उपलब्धि नहीं है।

पूरे चुनाव में कहीं भी सत्ता विरोधी लहर नहीं दिखी। इसका अर्थ यह है कि श्री नरेंद्र मोदी ने 10 वर्ष तक बहुत अच्छे कार्य किए हैं। इसमें कोई दो मत नहीं है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के कार्यकाल में देश हर तरह से आगे बढ़ा है। देश आर्थिक रूप से सशक्त हुआ है। बेघरों के लिए मकान के साथ शौचालय बन रहे हैं। गरीबों को आयुष्मान योजना के अंतर्गत पांच लाख रु. का स्वास्थ्य बीमा मिल रहा है। 80 करोड़ लोगों को निःशुल्क अनाज मिल रहा है। भ्रष्टाचार पर लगाम लगी है। महंगाई भी नियंत्रण में है। जो बैंक घाटे में थे, वे मुनाफा कमा रहे हैं। इसके साथ ही देश में ढांचागत सुविधाएं बढ़ी हैं। रेलवे का

विस्तार हो रहा है। राजमार्गों का जाल बिछ रहा है। विदेश नीति ऐसी है कि दुनिया के बड़े देशों के राष्ट्राध्यक्ष भी श्री मोदी से मिलने के लिए तैयार रहते हैं। पहले अमेरिका, ब्रिटेन जैसे बड़े देश भारत और उसके प्रधानमंत्री को कोई महत्व नहीं देते थे, लेकिन आज अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन भी श्री मोदी को पीछे से बुलाकर उनसे मिलते हैं, उनके ऑटोग्राफ की मांग करते हैं। ऐसे दृश्य हर भारतीय को गर्व से भर देते हैं। इसके साथ ही सांस्कृतिक रूप से देश जाग रहा है। 500 वर्ष से जो राम मंदिर नहीं बन रहा था, उसे श्री मोदी ने बनवाया। इसके बावजूद भाजपा अयोध्या में हार गई। इस पर मंथन करना चाहिए कि ऐसा क्यों हुआ! बहुत





सारे लोग बहुत कुछ कह रहे हैं। पर एक बात साफ दिखती है कि भाजपा के विरोधी हिंदुओं को जाति में बांटने में सफल रहे। बता दें कि 2014 और 2019 में हिंदुओं ने जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर भाजपा को समर्थन दिया था। यही कारण है कि 2014 में भाजपा को 282 सीटें और 2019 में 303 सीटें मिली थीं। विपक्षी नेताओं को हिंदुओं की यही एकजुटता अपने अस्तित्व के लिए खतरे की घंटी लगने लगी। इसलिए उन्होंने हिंदुओं को बांटने के लिए कई तरह की अफवाहें उड़ाईं। विपक्ष ने रट लगाना शुरू कर दिया कि भाजपा संविधान बदल देगी, भाजपा आरक्षण समाप्त कर देगी...। विपक्ष के इस झांसे में हिंदुओं का एक बड़ा वर्ग आ गया और उन्होंने जाति के आधार पर मतदान किया। वाराणसी के हिंदू मतदाताओं ने तो सारी हदें पार कर दीं। उनमें जाति और क्षेत्र का ऐसा जहर भर दिया गया उन्होंने एक ऐसे प्रधानमंत्री का भी मान नहीं रखा, जो निरंतर अपने लिए नहीं देश के कार्य कर रहा है। हिंदुओं के इस व्यवहार से पता चलता है कि भारत वर्षों तक मुसलमानों और अंग्रेजों के अधीन क्यों रहा! ऐसा लगता है कि हिंदुओं को गुलामी ही पसंद है।

यह भारत के लिए दुर्भाग्य है कि हिंदू जाति में तुरंत बंट जा रहे हैं। इस जाति भेद के कारण हिंदू हजार वर्ष तक गुलाम रहे हैं। हिंदुओं की आपसी फूट का लाभ देश विरोधी तत्व उठा रहे हैं। सैकड़ों वर्ष के बाद श्री नरेंद्र मोदी जैसा कोई हिंदू नेता भारत को मिला है। अपने कार्यों और व्यवहार से साफ बता रहे हैं कि वे किस दिशा में भारत को ले जाना चाहते हैं। इसके

देश में एक ऐसा वर्ग है, जो बहुत ही चालाकी के साथ भाजपा को हराने लिए वोट करता है। उसकी रणनीति यह है कि चाहे जो भी दल भाजपा को हरा दे, उसे ही वोट करना है। यह वर्ग कथित महंगाई का रोना नहीं रोता है। उसे बेरोजगारी से भी कोई मतलब नहीं है। यह वर्ग केवल अपने मजहब को देखता है। इसके लिए वह कुछ भी त्याग करने को तैयार है। यह वर्ग सीएए का विरोध इसलिए कर रहा है कि उसे बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों को भारत में बसाना है।

बाद भी शायद हिंदू समझ नहीं पा रहे हैं या फिर उन पर जाति का ऐसा नशा चढ़ा है कि उन्हें भविष्य के खतरों का पता ही नहीं चल रहा है। वहीं दूसरी ओर देश में एक ऐसा वर्ग है, जो बहुत ही चालाकी के साथ भाजपा को हराने लिए वोट करता है। उसकी रणनीति यह है कि चाहे जो भी दल भाजपा को हरा दे, उसे ही वोट करना है। यह वर्ग कथित महंगाई का रोना नहीं रोता है। उसे बेरोजगारी से भी कोई मतलब नहीं है। यह वर्ग केवल अपने मजहब को देखता है। इसके लिए वह कुछ भी त्याग करने को तैयार है। यह वर्ग सीएए का विरोध इसलिए कर रहा है कि उसे बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों को भारत में बसाना है। यह वर्ग जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाने का विरोध इसलिए करता है कि उसे जम्मू-कश्मीर को मुसलमानों के लिए 'सुरक्षित' रखना है। वहां किसी दूसरे राज्य का व्यक्ति न बसे। इस वर्ग के कुछ लोग भारत पर इस्लामी झंडा फहराने के लिए मरने और मारने के लिए तैयार रहते हैं। यह वर्ग समान नागरिक संहिता का विरोध

इसलिए करता है कि वह चार निकाह कर सके। वहीं दूसरी ओर हिंदू उन नेताओं के झांसे में तुरंत फंस जा रहे हैं, जिनकी सोच सत्ता और अपने परिवार से दूर जा ही नहीं पाती है। ऐसे नेताओं को देश से कोई मतलब नहीं है। जो लोग जाति के नाम पर वोट करते हैं, उन्हें यह बोलने का कोई अधिकार नहीं है कि देश में विकास नहीं हो रहा है, सड़कें अच्छी नहीं हैं, अस्पतालों में सुविधाएं नहीं हैं, बिजली नहीं मिल रही है ... आदि आदि।

ऐसे हिंदुओं ने देशभर में बन रहे राजमार्गों का स्वाहा कर दिया। राम मंदिर का स्वाहा कर दिया। गरीबों के लिए बने चार करोड़ घरों का स्वाहा कर दिया। सेना की मजबूती का स्वाहा कर दिया। दंगा-मुक्त देश का स्वाहा कर दिया। आतंकवाद-मुक्त समाज का स्वाहा कर दिया। ऐसे लोगों के लिए केवल इतना कहना शेष रह गया है कि मोदी जी, हमें आपके कार्यों से कुछ लेना-देना नहीं है। हमें तो केवल जाति के उम्मीदवार चाहिए और कुछ मुफ्त की रेवड़ी। देश में भांडू में जाए। □



# कर्तृत्व क्षमता की प्रतीक : अहिल्या बाई

■ मोहनराव भागवत, सरसंघचालक, रा.स्व.संघ

पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई होलकर की त्रिशताब्दी का यह वर्ष है। हमारे लिए आज की स्थिति में भी उनका चरित्र आदर्श के समान है। दुर्भाग्य से उनको वैधव्य प्राप्त हुआ। लेकिन एक अकेली महिला होने के बाद भी अपने बड़े राज्य को केवल सम्भालना नहीं, बड़ा करना और केवल राज्य को बड़ा नहीं करना, तो उसको सुराज्य के नाते उसका कार्यवहन करना। राज्यकर्ता कैसा हो वह इसका आदर्श है। उनके नाम के पीछे पुण्यश्लोक यह शब्द है। पुण्यश्लोक उस राज्यकर्ता को कहते हैं, जो राज्यकर्ता अपनी प्रजा को सब प्रकार के अभावों से मुक्त करता है, दुःख से मुक्त करता है। एक तरह से प्रजा के प्रति अपने कर्तव्य से उन्नत हो जाता है।

वास्तव में उस काल में हमारे यहां पर जो आदर्श राज्यकर्ता हुए उनमें से एक देवी अहिल्याबाई थीं। अपनी प्रजा को रोजगार मिले इसलिए उन्होंने उद्योगों का निर्माण किया और ऐसा पक्का निर्माण किया कि महेश्वर का वस्त्र उद्योग आज भी चलता है और बहुत लोगों को रोजगार देता है।

प्रजा के सभी अंगों की, जो दुर्बल थे, पिछड़े थे उन्होंने उनकी भी चिंता की। अपने राज्य की कर व्यवस्था को उन्होंने सुसंगत कर दिया। किसानों की चिंता की। सब प्रकार से उनका राज्य सुराज्य था। प्रजा की माता के जैसे चिंता करने वाली राज्यकर्ता, इस नाते उनको देवी अहिल्याबाई यह विधा उसी समय प्राप्त हुआ होगा, क्योंकि अपने बचपन से हम उनका नाम सुनते हैं तो केवल अहिल्याबाई होलकर ऐसा नहीं सुनते, देवी अहिल्याबाई



होलकर ऐसा सुनते हैं। तो ऐसी पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई होलकर महिलाओं के कर्तृत्व की क्षमता की प्रतीक हैं।

मातृशक्ति के सशक्तिकरण की बात आज हम करते हैं, लेकिन मातृशक्ति कितनी सशक्त है और क्या-क्या कर सकती है, कैसे कर सकती है? इसका अनुकरण करने लायक आदर्श देवी अहिल्याबाई ने अपने जीवन से हम सब लोगों के सामने रखा है।

उन्होंने जो काम किया वो अनेक प्रकार से विशेष है। राज्य को उन्होंने कुशलतापूर्वक चलाया। उस समय सभी राज्यकर्ताओं से उनके संबंध मित्रता के थे, इतना ही नहीं तो आसपास के सभी राज्यकर्ता भी उनको देवी स्वरूपा मानते थे। इतनी श्रद्धा और आदर उनके बारे में समकालीन राज्यकर्ताओं में था। राज्य पर कोई आक्रमण न हो, इसलिए समरनीति की जानकार के रूप में भी उनको जाना जाता है। बड़ी सेना लेकर राघोबा दादा आए थे, लेकिन उन्होंने अपनी नीति से और बिना संघर्ष के उस आपत्ति का निवारण कर दिया। ऐसी कुशल प्रशासक, उत्तम राज्यकर्ता, सामरिक और राजनयिक कर्तव्यों में माहिर राज्यकर्ता थीं, और केवल अपने राज्य की उन्होंने चिंता नहीं की पूरे देश की चिंता की। अपने देश की संस्कृति का जो आधार है, उसको

पुष्ट करने के लिए देश में अनेक स्थानों पर उन्होंने मंदिर बनवाए। स्वयं राज्य करती थीं, तो भी अपने को राजा नहीं मानती थीं। 'श्री शंकर कृपे करुण' ऐसा लिखती थीं। श्री शंकर आज्ञेकरुण - शिव भगवान की आज्ञा से राज्य चला रही हैं, ऐसा उनका भाव था। उन्होंने कई जगह मंदिर बनवाए, नदियों पर घाट बनवाए, धर्मशालाएं बनवाई। उन्होंने सारे भारत में यह कार्य किया। जो धर्मयात्राओं के मार्ग थे और व्यापारिक आने-जाने के मार्ग थे, उन पर यह सारे काम किए ताकि पूर्ववत भारत की सारी जनता का आना-जाना अपने सांस्कृतिक स्थलों में और अपनी आजीविका के लिए सर्वत्र चलता रहे। एकात्मता बनती रहे, बढ़ती रहे। इतना दूर का विचार करके उन्होंने यह काम किया और विशेष है कि अपनी धर्म श्रद्धा के कारण किया। इसलिए उन्होंने यह सारा काम अपनी निजी संपत्ति में से किया।

स्वयं रानी होकर बहुत सादगी से रहती थीं। इस प्रकार प्रजा का पालन, राज्य का संचालन, राज्य की सुरक्षा, देश की एकात्मता-अखंडता, सामाजिक समरसता, सुशीलता और सादगी, इनका आदर्श रखने वाली एक महिला राज्यकर्ता, आदर्श महिला इस प्रकार पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई का चित्र हमारे सामने है। आज की हमारी स्थिति में भी हमारे लिए वो एक आदर्श है, उनका अनुकरण करने के लिए वर्ष भर उनका स्मरण करने का प्रयास सर्वत्र चलने वाला है, यह अतिशय आनंद की बात है। उस प्रयास को सब प्रकार की शुभकामना देता हुआ मैं अपना कथन समाप्त करता हूं। □

# शरणार्थियों का सपना साकार

## ■ प्रतिनिधि

इन दिनों दिल्ली सहित भारत के अन्य स्थानों पर रहने वाले उन गैर-मुसलमानों को भारत की नागरिकता मिल रही है, जो जान और धर्म बचाने के लिए पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से आए हैं। इनमें हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध, ईसाई और पारसी हैं।

गत 15 मई को केंद्रीय गृह सचिव अजय कुमार भल्ला ने 14 हिंदू शरणार्थियों को भारत की नागरिकता के प्रमाणपत्र सौंपे। इसके बाद पूरे देश में कुल 300 शरणार्थियों को नागरिकता प्रदान की गई। इन लोगों को मेल के माध्यम से नागरिकता प्रमाणपत्र भेजा गया। ये सभी शरणार्थी 2014 से पहले पाकिस्तान से आए हैं। इन शरणार्थियों को नागरिकता संशोधन कानून (सी.ए.ए.) के अंतर्गत नागरिकता दी गई है। अब संबंधित सरकारी विभाग शेष शरणार्थियों को भी जल्दी से जल्दी नागरिकता देने की प्रक्रिया पूरी करने में लगा है। इसे देखते हुए हजारों शरणार्थियों के मन में आस जगी है कि आज नहीं, तो कल उन्हें भी भारत की नागरिकता मिल ही जाएगी।

बता दें कि पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में गैर-मुसलमानों यानी हिंदुओं, सिखों, ईसाइयों, पारसियों, बौद्धों और जैनियों के साथ पशुओं जैसा व्यवहार होता है। इन लोगों से काम कराके मजदूरी नहीं दी जाती है। जिहादी तत्व इन्हें अपना पर्व-त्योहार भी नहीं मनाने देते हैं। मजहबी उन्मादी



एक पाकिस्तानी हिंदू महिला शरणार्थी को नागरिकता का प्रमाणपत्र देते गृह सचिव अजय कुमार भल्ला

इन देशों में रहने वाले हिंदुओं, सिखों, ईसाइयों, पारसियों की बहू-बेटियों का अपहरण कर जबर्दस्ती किसी मुसलमान से निकाह करा देते हैं। जिहादी तत्व इन बेचारों की जमीन, दुकान और मकान पर जबरन कब्जा कर लेते हैं। यही नहीं, मंदिरों और अन्य पूजास्थलों को अपवित्र कर उन्हें भी अपने कब्जे में ले लेते हैं। यानी ये लोग अपने धर्म के कारण सताए जाते हैं।

यही कारण है कि दशकों से पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के हिंदू, सिख, ईसाई, जैन और बौद्ध भारत में शरण ले रहे हैं। यह उनका अधिकार भी है, क्योंकि विभाजन के बाद भारत के तत्कालीन नेतृत्व ने ऐसे लोगों को आश्वासन दिया था कि उन्हें कभी भी कोई दिक्कत हो तो वे भारत आ सकते हैं। यही कारण है कि पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश

के अल्पसंख्यक भारत को अपना 'घर' मानते हैं और जब भी उनके सामने अस्तित्व का संकट आता है, तो वे लोग भारत की ओर ही आस भरी नजरों से देखते हैं। उन्हें लगता है कि दुनिया में भारत ही एक मात्र ऐसा देश है, जो उन्हें शरण दे सकता है। इसलिए पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में सताए जा रहे हिंदू और अन्य अल्पसंख्यक किसी न किसी बहाने भारत आ रहे हैं। ये शरणार्थी हैं, न कि घुसपैठिया।

इन लोगों को भारत की नागरिकता देने के लिए ही नरेंद्र मोदी सरकार ने 1955 के नागरिकता कानून में संशोधन कर सी.ए.ए. बनाया है। नागरिकता संशोधन विधेयक-2019 के संसद के दोनों सदनों से पारित होने के बाद ही सी.ए.ए. अपने अस्तित्व में आया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री श्री अमित शाह के साथ ही भाजपा के



सभी नेता बार-बार यह कह रहे हैं कि सी.ए.ए. किसी की नागरिकता नहीं लेता है, बल्कि देता है। इसके बाद भी विपक्ष और मुसलमानों के नेता कहते रहे हैं कि सी.ए.ए. मुसलमान विरोधी है। एक वर्ग मुसलमानों को भड़काता रहा है कि सी.ए.ए. से तुम्हारी नागरिकता चली जाएगी। यही कारण है कि 2019 में जब सी.ए.ए. कानून बना तो देश के अनेक भागों में इसके विरोध में धरने-प्रदर्शन हुए। दिल्ली के शाहीनबाग में तो कई महीने तक मुसलमानों ने धरना दिया। जब इस धरने को खत्म कराने के प्रयास हुए तो कुछ लोग सर्वोच्च न्यायालय तक पहुँच गए थे। उन्हीं दिनों कोरोना के नाम से वैश्विक महामारी फैली और केंद्र सरकार ने पूरे देश में लॉकडाउन लगा दिया। इसके बाद अचानक एक दिन पुलिस ने शाहीनबाग के धरने को समाप्त कराया।

शाहीनबाग में जो लोग बैठे थे या उनका जो लोग समर्थन कर रहे थे, ऐसे लोगों का कहना है कि सी.ए.ए. में मुसलमानों को भी शामिल किया जाए। वहीं भारत सरकार का कहना है कि चूँकि पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में मुसलमान बहुसंख्यक हैं और मजहब के आधार पर उनके साथ कोई भेदभाव नहीं होता है, इसलिए उन्हें सी.ए.ए. के अंतर्गत नहीं लिया जा सकता है। इसके बावजूद मुसलमान नेता और विपक्षी दल आम मुसलमानों को सी.ए.ए. को लेकर भड़का रहे हैं। लोकसभा चुनाव के दौरान भी सी.ए.ए. का मुद्दा उठा। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी खुलकर कह रही हैं कि वे पश्चिम बंगाल में सी.ए.ए. को लागू नहीं होने देंगी। ओवैसी जैसे मुस्लिम नेता भी खुलकर कह रहे हैं

कि सी.ए.ए. मुसलमानों की नागरिकता छीनने लिए बनाया गया है।

चाहे ममता बनर्जी हों, ओवैसी हों, अरविंद केजरीवाल हों, राहुल गांधी हों, अखिलेश यादव हों, ये सभी जानते हैं कि सी.ए.ए. से किसी की नागरिकता नहीं जाएगी। इसके बावजूद ये लोग सी.ए.ए. को लेकर देश में अराजक माहौल बनाने का प्रयास करते रहते हैं। वास्तव में ये लोग सी.ए.ए. का विरोध उन बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों को बचाने के लिए कर रहे हैं, जो चोरी-चुपके से भारत के अंदर घुस आए हैं। इसलिए इन्हें घुसपैठिया कहा जाता है। इन घुसपैठियों को एक षड्यंत्र के अंतर्गत भारत लाया जाता है। यह षड्यंत्र है भारत में मुसलमानों की आबादी बढ़ाने का। कुछ मजहबी संगठन ही बांग्लादेशी मुसलमानों को हर तरह की मदद देकर भारत लाते हैं और यहाँ बसाते हैं। वोट बैंक के लालची नेता इन घुसपैठियों को समस्त सरकारी सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं। उनके लिए किसी सरकारी जमीन पर झुग्गी बनवाते हैं। इसके बाद उनके मतदाता पहचानपत्र और आधार कार्ड भी बनाए जाते हैं। यही कारण है कि आज भारत में चार से पाँच करोड़ बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठिए रह रहे हैं। बड़े महानगरों में हिंदू नाम से बांग्लादेशी मुस्लिम महिलाएँ घरों के अंदर झाड़ू-पोंछा, बर्तन धोने और इस तरह के अन्य छोटे-मोटे काम करती हैं। पुरुष बांग्लादेशी घुसपैठिए दिन में रिक्षा चलाते हैं, मजदूरी करते हैं और रात में गलत धंधे करते हैं। आए दिन इस तरह की खबरें आती रहती हैं। जब पुलिस इन घुसपैठियों के विरुद्ध

कोई कार्रवाई करती है, तो नेता और तथाकथित समाजसेवी सगठनों के कार्यकर्ता इन लोगों को पश्चिम बंगाल का नागरिक बताकर उनके बचाव में कूद पड़ते हैं। यही कारण है कि ये बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठिए भारत के प्रायः हर शहर में बस गए हैं। अब तो ये लोग चुनावों में मतदान भी करते हैं। इसलिए वोट बैंक के लालची नेता इन्हें बचाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। जो लोग सी.ए.ए. का विरोध कर रहे हैं, वे इन्हीं बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों को बचाने का प्रयास कर रहे हैं। यही कारण है कि ये लोग सरकार से माँग कर रहे हैं कि सी.ए.ए. में मुसलमानों को भी शामिल किया जाना चाहिए।

यहाँ एक बात और ध्यान देने वाली है कि 1947 में भारत का बंटवारा मजहब के आधार पर हुआ था। उस समय हुए एक जनमत में 99 प्रतिशत मुसलमानों ने पाकिस्तान बनाने के पक्ष में मतदान किया था। लेकिन जब पाकिस्तान बना तो अधिकांश मुसलमान भारत से गए ही नहीं। ऐसा कहा जाता है कि यह उनकी रणनीति थी कि मुसलमानों के लिए एक देश 'पाकिस्तान' बना लो और बाद में भारत को भी मुस्लिम देश बनाने के लिए कार्य करो। इसी रणनीति के अंतर्गत मुस्लिम घुसपैठियों को भारत में बसाया जा रहा है, ताकि एक दिन भारत भी मुस्लिम-बहुल हो जाए।

अभी जो लोग भारत सरकार में हैं, उन्हें यह सब पता है। इसलिए उन्होंने सी.ए.ए. में मुसलमानों को शामिल नहीं किया है। इसे भारत के आम लोग भी समझें और जो लोग सी.ए.ए. का विरोध कर रहे हैं, उनका साथ न दें। जय भारत!! □



# विस्थापन की व्यथा

■ इन्दिरा राय



सीताराम सीताराम सीताराम कहिए, जाही विधि राखे राम ताहि विधि रहिए। यह पंक्ति बार-बार दोहराई जा रही थी। यह मधुर स्वर लहरी जब मेरे कानों में पड़ी तो मेरे कदम वहीं ठहर गये। मैं तल्लीन होकर उसे सुनती रही। अंतिम पंक्ति के भाव बार-बार बदल रहे थे। जैसे उस ईश्वरीय शक्ति से प्रण किया जा रहा था आपकी इच्छा ही मेरे लिये सर्वोपरि है। स्वर में करुण और समर्पण साफ परिलक्षित हो रहा था। शायद अपने घर में भजन गा रही महिला को आभास हुआ कि कोई बाहर खड़ा उसे सुन रहा है। पर्दा उठा कर बाहर आई। मुझे अपरिचित को देखकर अपनी प्रश्नवाचक निगाहें मुझ पर टिका दीं। प्रतिउत्तर में मैंने हाथ जोड़ दिये। आपका स्वर बहुत मधुर है। इसलिये मैं ठहर कर सुनने लगी। महिला ने मेरा अभिवादन स्वीकार किया और बोली, “माँ जी मैंने आपको कभी नहीं देखा, आप कौन हैं और हमारी बस्ती में क्या कर रही हैं?” मैंने छोटा-सा उत्तर दिया मैं सेवा भारती का प्रकल्प देखने की

इच्छा से यहां आई हूँ। सेवा भारती का नाम सुनते ही महिला सहज हो गई। अच्छा तो आप बाहर क्यों खड़ी हैं। अंदर आइए उनके आमंत्रण पर मैं अंदर गई। देखा राम दरबार का एक कैलेण्डर दीवार पर चिपका था। उस पर प्लास्टिक के फूलों की एक माला चढ़ी हुई थी। सामने दीपक जल रहा था। यही छोटा सा उनका मंदिर था। एक छोटा मेरी ओर सरकाते हुए बोली बैठिए। मैं निसंकोच बैठ गई, उनके उच्चारण का लहजा कुछ अलग था। मैंने पूछ लिया आप कहां की रहने वाली हैं? मेरा प्रश्न उन्हें असहज कर गया। थोड़ा संयत होते हुए बोली हम पाकिस्तान से आये हैं। एक दर्द उनके चेहरे पर उभर आया और फिर कुछ पूछने का साहस मुझे न हुआ। उसी समय एक 8-9 वर्ष की बालिका एक कटोरी लेकर आई। मेरी उपस्थिति को देखते हुए एक कोने में उनको ले जाकर धीमे स्वर में कटोरी में चीनी की मांग करते हुए बोली शाम को पपा लाएंगे तो लौटा जाऊंगी। चीनी लेकर बालिका चली गई। वो भी संयत

होकर आकर मेरे पास बैठ गई। उसके बैठते ही पड़ोस की दो महिलाएं, जिन्होंने मुझे अन्दर जाते हुए देखा था आ गई। मेरे कुछ कहने से पहले ही बोल पड़ी क्या बताएं हम अपना बसा बसाया घर मकान जमीन सब छोड़कर आए हैं। ‘सुना है जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है’ इसी भरोसे पर हम अपना सब कुछ छोड़कर आए हैं। मैंने उन आगंतुक महिलाओं की ओर इशारा करते हुए पूछा क्या आप लोग भी... अभी मेरा वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि उन्होंने हाँ में सिर हिला दिया। मैंने प्रश्न किया आखिर आप लोग क्यों अपना बसा-बसाया घर मकान, जमीन छोड़ आए हैं, कोई कारण तो जरूर होगा। सबने एक-एक कर अपनी व्यथा सुनाई। उसका निचोड़ यह था कि वहां हम सुरक्षित नहीं थे। हमेशा डर लगा रहता था कब कौन हमारी बहन बेटियों को उठा ले जाए, उनका धर्म परिवर्तन कर किसी भी व्यक्ति से उनका निकाह पढ़वा दिया जाए। इसलिए हम अपनी बेटियों को बाहर नहीं भेजते, पढ़ाते



भी नहीं हैं, घर का काम-काज और सिलाई-कढ़ाई सिखते हैं। हमें अपने पूजा-पाठ, व्रत-त्योहार मनाने पर भी पाबंदी थी। चोरी-चुपके हम व्रत त्योहार मनाते थे। अपनी पिछली पीढ़ी को घुट-घुटकर जीते देख कर हमने निश्चय किया कि अब यह देश छोड़ने में ही हमारी भलाई है। तीर्थयात्रा का वीजा लेकर गंगा नहाने और धार्मिक स्थानों का दर्शन करने के लिए आए थे। फिर यहीं के होकर रह गये। हमसे पहले भी हमारे कुछ रिश्तेदार यहां आ चुके हैं। वे लोग भाटी माइन्स, मजनु का टीला, आदर्श नगर, रोहिणी सेक्टर-11 और रोहिणी सेक्टर-25 में रह रहे हैं। हममें से कुछ लोग सिन्धी, गुजराती और पंजाबी भाषा बोलते हैं। कुछ लोग कालोनियों में भी किराये का मकान लेकर रहते

हैं। तभी बाहर एक युवा साइकिल को स्टैंड पर खड़ा कर अंदर आया और पांच महिलाओं को देखकर गृह स्वामिनी से खाना बांध कर देने का आग्रह किया। आस-पड़ोस की महिलाएं उठ कर चली गईं। गृहस्वामिनी खाना पैक करने के लिये छोटी सी रसोई की ओर बढ़ गई। युवक एक गिलास पानी पीकर कुछ क्षण विश्राम की मुद्रा में बैठ गया। उसके अभिवादन के बाद मैंने उससे बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ाया क्या करते हैं आप? युवक थोड़ा सकुचाया और बोला हम यानी मैं और मेरे बड़े भाई मोबाइल रिपेयर का काम करते हैं। यहां से थोड़ी दूरी पर हमारी मोबाइल रिपेयर की छोटी दुकान है गुजारा लायक कमा लेते हैं। मेरे मन में वही प्रश्न घूम रहा था आखिर क्यों कोई अपना घर-बार मकान, जमीन छोड़कर सभी सुविधाओं छोड़कर यहां परेशानियां और कष्टमय जीवन बिताए। मैंने जिज्ञासावश युवक के आगे यह प्रश्न रख दिया। एक गहरी लम्बी सांस लेकर उसने बोलना शुरू किया आप लोग सोच भी नहीं सकते हम वहां (पाकिस्तान) में कितनी प्रताड़ना झेलते थे। हमारी बहन-बेटियों की इज्जत वहां सुरक्षित नहीं थी। कदम-कदम पर हमें अपमानित और प्रताड़ित किया जाता था। हमारी धार्मिक आस्था को बार-बार कुचला जाता था। बीना अपराध भी पुलिस हमें पकड़ लेती थी। अदालतों में भी हमारी कोई सुनवाई नहीं होती थी। न हमें रात को चैन था न दिन को शांति। ऐसे में सारी सुविधायें और साधन बेकार लगने लगे। अपनी धार्मिक आस्था और इज्जत को सुरक्षित रखने के लिये हमने समझौते नहीं संघर्ष का रास्ता चुना स्वाभिमान और आत्मसम्मान से बढ़कर कुछ नहीं

है। हम मेहनती और ईमानदार लोग हैं। हमारे कुछ साथी रेहड़ी लगाते हैं, कुछ पटरी पर छोटा-मोटा सामान बेचते हैं, कुछ साइकिल पर कचोड़ी बेचने का काम करते हैं। धान और गेहूं की कटाई के समय हम में से कुछ भाई पंजाब जाकर कटाई का काम भी करते हैं। अपनी जीवन की गाड़ी को पटरी पर लाने के लिये हम भरपूर मेहनत करते हैं। इतनी देर में महिला भोजन पैक करके ले आई। युवक नमस्ते कह उठकर चला गया। महिला ने बताया यह मेरे छोटे देवर हैं। मैंने परिवार के अन्य सदस्यों के बारे में जानना चाहा। यहां तो मेरे तीन बच्चे हम पति-पत्नी और देवर हैं। पीछे (पाकिस्तान) में सास-ससुर दो जेठ जिठानियां और उनके बच्चे हैं।

आप को यहां कैसा लगता है? मैं बहुत खुश हूं। यहां हमारे बच्चे खास कर बेटियां सुरक्षित हैं, उन पर वो बन्दिशें नहीं हैं। हम अपने पूजा-पाठ हाट-बाजार जाने के लिये स्वतंत्र और सुरक्षित हैं। आधा पेट खाकर भी जो चैन और शांति यहां मिल रही है। हम उसका भरपूर आनन्द उठा रहे हैं। अगर आप कहें तो सेवा भारती के केन्द्र पर चलकर कुछ और बहनों से मिलकर कुछ और आवश्यक चर्चा कर लें। वहीं चलकर आपका पूरा भजन भी सुनेंगे, वह सहर्ष तैयार हो गईं।

सेवा भारती संचालित केन्द्र में 7-8 बहनें केन्द्र पर पहुंच गईं। प्रथम परिचय के बाद बहनों के मन में अनेक प्रश्न थे हमारे बच्चे यहां पढ़ सकेंगे या नहीं बच्चियों को सुरक्षा और शिक्षा मिलेगी या नहीं, हमारा भविष्य क्या होगा, क्या मेहनत कर हम यहां मकान दुकान खरीद पायेंगे या नहीं? उनमें से एक





महिला बोली वैसे तो सेवा भारती हमारी बहुत सहायता कर रही है। हमारे और हमारे परिवारों के लिये कौशल विकास कार्यक्रम में मोबाइल रिपेयर, कम्प्यूटर, सिलाई, ब्यूटी पार्लर का कोर्स यहां सिखाया गया है। कुछ लोगों ने अपने-अपने छोटे व्यवसाय भी खोल लिए हैं। छोटी बच्चियां, जो वहां कभी स्कूल नहीं गईं, यहां अक्षर ज्ञान गिनती सीख रही हैं। खुश होकर नाचने गाने और खेलने का अवसर उनके जीवन में आया है। सेवा भारती कभी-कभी डॉ.क्टरी जाँच का शिविर भी लगाती है, जिससे हमारी बहुत मदद हो जाती है। भोजन, वस्त्र, दवाइयों के वितरण से भी हमारी बहुत सहायता हो जाती है।

परन्तु हमारी हार्दिक इच्छा तो यह है कि हमें नागरिकता मिल जाए। अब विललित होने की मेरी बारी थी। शान्त और संयमित स्वर में उनसे कहना शुरू किया मैं कोई राजनेता तो हूँ नहीं, सेवा भारती की एक कार्यकर्ता हूँ। जहां तक मेरी जानकारी है आप लोगों ने भी नागरिकता कानून या सीए के बारे में सुना और जाना होगा। पड़ोसी देश के वो अल्प संख्यक लोग जो वहां धर्म के अधार पर प्रताड़ित हो रहे हैं उनके साथ दुर्व्यवहार हो रहा है यदि वो लोग यहां शरण के लिये आते हैं सरकार द्वारा बनाई शर्तों को पूरा करते हैं उनके सारे कागजात पूरे हैं तो भारत सरकार ऐसे हिन्दू, सिख, बौद्ध और ईसाइयों को भारत

की नागरिकता देगी। इसी सिलसिले में आपको बता दूँ कि जो लोग 2014 से पहले यहां शरण ले चुके हैं। अपने सारे प्रमाणपत्रों के साथ नागरिकता का फार्म भर चुके हैं। सेवा भारती के कार्यकर्ता निरन्तर उनके फार्म भरने और आवेदन करने में सहायता कर रहे हैं। अब तक करीब 1400 फार्म भरे जा चुके हैं। पहले बैच में आवेदन करने वालों को नागरिकता मिल गई है। अब वो सभी सरकारी सुविधाओं का लाभ उठा सकेंगे उनके बच्चे सरकारी विद्यालयों में पढ़ सकेंगे। योग्यता के अनुसार सरकारी नौकरियां प्राप्त कर सकेंगे। यह बात सुनकर उनमें आशा और प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। नागरिकता प्राप्त करने पर जो खुशी उनके चेहरों पर थी उसे शब्दों में कह पाना कठिन है। हृदय से सभी सेवा भारती कार्यकर्ताओं का धन्यवाद कर रहे थे।

मैंने अपनी बात पूरी की सभी संतुष्ट और प्रसन्न दिखाई दे रही थी। कुछ ने घर चल कर चाय पीने का भी आमंत्रण दिया। उन सबका धन्यवाद कर मैं अपने गंतव्य की ओर संतुष्टि का भाव लिए चल दी। उन सभी कार्यकर्ताओं को मेरा नमन है जो सच्ची लगन से इस सेवा कार्य में लगे हुए हैं। □

## नंद नगरी केंद्र के लिए भूमि पूजन

गत 26 मई को को नंद नगरी केंद्र का भूमि पूजन किया गया। इस अवसर पर विभाग अध्यक्ष, विभाग मंत्री, विभाग कोषाध्यक्ष, जिला अध्यक्ष, जिला मंत्री सहित जिले व नगरो से कार्यकर्ता उपस्थित रहे व शिक्षिका निरीक्षिका तथा इस कार्यक्रम में बस्ती के सेवित जन, घुमंतू समुदाय के लोगों ने भी भाग लिया। अंत में प्रसाद वितरण हुआ। □







# सीबीएसई उड़ान योजना : लड़कियों के लिए सुनहरा अवसर

■ अनुष्का नागपाल



**भारत** सरकार द्वारा चलाई जा रही सीबीएसई उड़ान योजना एक प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण योजना है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) के तत्वावधान में सीबीएसई द्वारा प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग संस्थानों में छात्राओं के कम नामांकन और स्कूल शिक्षा एवम् इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा के बीच शिक्षण अंतर को पाटने के लिए शुरू की गई योजना है। यह योजना उन लड़कियों के लिए बनाई गई है जो समाज में पिछड़े एवं आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से हैं। सरकार द्वारा इस योजना से लड़कियां अपने सपनों को पूरा कर, आसमान में एक लंबी उड़ान भर सकती हैं और साथ ही साथ राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका भी

निभा सकती हैं।

इस योजना के तहत विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित के क्षेत्र में लड़कियों को भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह योजना कक्षा 11 एवं 12वीं में पढ़ने वाली मेधावी छात्राओं को अतिरिक्त सहायता प्रदान करती है। उन्हें कोचिंग और ट्रेनिंग के माध्यम से इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षाओं जैसे (JEE) में सफल होने के लिए तैयार करता है।

## योजना के मुख्य बिन्दु

- ऑनलाइन कोचिंग इस योजना के तहत लड़कियों को आईआईटी (IIT-JEE) की तैयारी के लिए निःशुल्क ऑनलाइन कोचिंग व ट्रेनिंग उपलब्ध कराई जाती है।

- रीडिंग मैटेरियल- योजना के अंतर्गत छात्राओं को रीडिंग मैटेरियल वीडियो लैक्चरर्स ई बुक्स और अभ्यास प्रश्न पत्र तैयारी के लिए प्रदान किए जाते हैं।
- नियमित परीक्षण: छात्राओं के प्रदर्शन की निगरानी के लिए नियमित समय पर ऑनलाईन टेस्ट भी आयोजित किए जाते हैं जिससे उनकी तैयारी को बेहतर बनाने के लिए फीडबैक मिल सकता है।
- काउंसलिंग योजना में मानसिक और शैक्षिक समर्थन के लिए नियमित समय पर काउंसलिंग सेशन भी आयोजित किए जाते हैं।

## ऐसे उठाएं योजना का लाभ

सीबीएसई उड़ान योजना का लाभ





उठाने के लिए कुछ प्राथमिक योग्यताएं निर्धारित की गई हैं। इन योग्यताओं का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सही उम्मीदवारों को योजना का लाभ मिले।

- उम्मीदवार को कक्षा दसवीं में कम से कम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त करने होंगे और गणित और विज्ञान विषय में न्यूनतम 80 प्रतिशत अंक होना अनिवार्य है।
- उम्मीदवार को किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से कक्षा 11वीं व 12वीं में नामांकित होना चाहिए।
- आधार कार्ड उम्मीदवार के पास होना अनिवार्य है।
- उन लड़कियों एवं उन परिवारों को मिल सकता है जिनकी आय 6 लाख से कम है।

वर्ष 2017 में 135 लड़कियों ने इंजीनियरिंग की परीक्षा (JEE) को

सफलतापूर्वक पास किया था। यह सफलता हमें बताती है कि किस तरीके से इस योजना का लाभ हमारे समाज में लड़कियां उठा रही हैं। यह योजना उन लड़कियों के अधूरे सपनों को पूरे करने के लिए है, जिन्हें वह महंगी फीस और पढ़ाई के कारण छोड़ देती हैं।

सीबीएसई उड़ान योजना हमारे समाज में एक महत्वपूर्ण बदलाव ला सकती है। इस योजना से हम लड़कियों को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित कर सकते हैं, विशेष कर विज्ञान और इंजीनियरिंग की क्षेत्र में। इस योजना से समाज में एक सकारात्मक बदलाव आ सकता है। उच्च शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने से लड़कियों का आत्मविश्वास बढ़ता है। वह अपने सपने और लक्षण को प्रति अधिक समर्पित होती हैं। किसी भी चुनौती का सामना

करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। उच्च शिक्षा और कैरियर में सफलता प्राप्त करने के बाद लड़कियां नेतृत्व की भूमिका में सक्षम होती हैं। वह समाज और अपने कैरियर में नेतृत्व कर सकती हैं और साथ ही अन्य लोगों को भी प्रेरित कर सकती हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने और विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने से लड़कियों का संचार कौशल में सुधार होता है, वह अपनी बात प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकती हैं। उच्च शिक्षा और प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के दौरान लड़कियों में समस्या समाधान कौशल का विकास होता है। वह विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करने और उनका समाधान करने में सक्षम होती हैं। □

(लेखिका दिल्ली विश्वविद्यालय में शोधकर्ता हैं।)

## राजपूतों की शान : आचार्य राघवेन्द्र

### ■ भारती बंसल

घुमन्तू समाज, कल्याणपुरी ने 18 मई को महाराणा प्रताप जी के गुरु आचार्य राघवेन्द्र जी की याद में भंडारे का आयोजन किया। इसमें सेवा भारती पूर्वी विभाग का भरपूर सहयोग रहा। कहा जाता है कि अगर आचार्य राघवेन्द्र न होते तो महाराणा प्रताप भी न होते। अस्त्र-शस्त्रों की सम्पूर्ण शिक्षा, युद्धनीति सिखाने वाले आचार्य ही थे। महाराणा प्रताप के लिये कहा जाता है कि युद्ध में उन्हें सिर कटाना पड़े तो ठीक, सिर झुकाना मंजूर नहीं था। आचार्य की तुलना महाभारत के द्रोण और चन्द्रगुप्त के गुरु चाणक्य से की जाती है। आचार्य राघवेन्द्र तत्कालीन समय में युद्ध नीति के सबसे

बड़े योद्धा थे। राघवेन्द्र ही ऐसे गुरु थे जिन्होंने महाराणा प्रताप को कुशल योद्धा और राजा बनने की रणनीति सिखाई। राघवेन्द्र मेवाड़ में ही रहते थे और मेवाड़ से उन्हें काफी गहरा प्रेम था। किसी और का स्वामित्व उन्हें हमेशा ही खलता था या चुभता था। इसलिये उन्होंने महाराणा को इस प्रकार से तैयार किया कि हम भारतीयों का सर वे हमेशा गर्व से ऊँचा रखें। आचार्य राघवेन्द्र ही वे गुरु थे जिनके कारण महाराणा ने अफगानी शम्स खॉ और अकबर के सेनापति बैरम खां तक को हरा दिया। कहा जाता है कि बैरम खां को हराने में आचार्य ने भी उतनी ही भगीदारी निभाई थी जितनी महाराणा

ने युद्ध लड़ने में निभाई थी, क्योंकि सारी रणनीति आचार्य ने ही तैयार की थी। ऐसा कहा जाता है कि बूंदी में होने वाला अधर्म युद्ध जो मुसलमानों और राजपूतों के मध्य तालमेल न बैठ पाने के कारण हो रहा था, उस समय पूरी रणनीति महाराणा प्रताप के आचार्य राघवेन्द्र ने समझाई। जिस कारण प्रताप जाकर अकेले ही बूंदी में हो रहे अधर्म को रोक देते हैं। छोटी उम्र में ही पूरी सेना को हरा देते हैं। पूरे भारत वर्ष में राणा का डंका बजने लगता है। मुगल शासकों को यह समझ आ गया था कि अब कोई ऐसा शासक आ चुका है जो अधर्म बिल्कुल सहन नहीं करेगा। □



# जल संरक्षण की सीख

■ आचार्य अनमोल

**ग**ंगा दशहरा हिन्दुओं का एक पवित्र त्योहार है। पौराणिक कथाओं के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को दशहरा कहते हैं। इस दिन स्नान, दान रूपात्मक व्रत होता है। इसी दिन माँ गंगा का स्वर्गलोक से भूलोक पर अवतरण हुआ था। स्कन्द पुराण के अनुसार माँ गंगा ज्येष्ठ शुक्ल दशमी हस्त नक्षत्र में बुधवार को भूलोक पर अवतरित हुई थी गंगा अवतरण दिवस भी कहा जाता है।

गंगा दशहरा के दिन पृथ्वी के जल स्रोतों की पूजा की जाती है। इस दिन कुछ प्रदेशों में जल और जीवन के सम्बन्ध का उत्सव मनाते हैं, क्योंकि यह धार्मिक उत्सव माँ गंगा से सम्बन्धित है। अतः हम लोगों को इस बात की जानकारी भी होनी चाहिए कि माँ गंगा की उत्पत्ति कैसे हुई तथा किस प्रकार सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा के कमंडल तक पहुंची।

## गंगा जी की उत्पत्ति

पौराणिक कथाओं के अनुसार गंगा जी की उत्पत्ति भगवान विष्णु जी के पैर के नख से हुई थी। उसके उपरान्त ब्रह्मा जी के कमंडल में समा गयी। दूसरी कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु जब वामन का अवतार लेकर राजा बलि के पसस गये तथा तीन पग भूमि दान में मांगी, तब पहले पग में वामन देवता ने समस्त भूलोक नाप लिया तथा जैसे ही दूसरा पग उठाया ब्रह्मा जी ने उसे जल से धोया तथा जल कमंडल में रख लिया। कमंडल का यही जल माँ गंगा है। माँ गंगा जी को देव नदी के नाम



से भी जाना जाता है। गंगा जी स्वर्ग लोक, पाताल लोक तथा भू लोक तीनों स्थान पर है। अब इन्हें त्रिपथ-गामिनी भी कहते हैं। गंगा जी को भगवान ब्रह्मा का द्रवित रूप माना जाता है। इसलिए कहा जाता है कि गंगा जल के छींटे मात्र से शरीर और आत्मा शुद्ध हो जाती है। पृथ्वी पर अवतार से पहले गंगा नदी स्वर्ग का हिस्सा थी।

## गंगा दशहरा का महत्व

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी हस्त नक्षत्र के दिन भागीरथ गंगा को धरती पर लाये थे। शास्त्रों के अनुसार गंगा दशहरा के दिन गंगा स्नान का विशेष महत्व होता है। इस दिन दान पुण्य का अपना विशेष स्थान तथा महत्व है। इस दिन गंगा नदी में खड़े होकर गंगा स्रोत का पाठ करने से मानसिक तथा शारीरिक यंत्रणा से मुक्ति मिलती है तथा पुण्य प्राप्त होता है। दशमी तिथि होने के कारण दस अंक का विशेष महत्व है। इस दिन पूजन में दस प्रकार की

वस्तुएं तथा दान की गयी वस्तुओं की संख्या भी दस होनी चाहिए। दान दस ब्राह्मणों को दे गंगा नदी में दस डुबकी लगाएं। गंगा पूजन के साथ भगवान शिव एवं भगवान विष्णु की पूजा करें, क्योंकि विष्णु जी नख से गंगा निकली है।

## दान किसका करें

गंगा दशहरा को जल से भरा मटका, मीठा जल, सत्तू तथा हाथ के पंखे का दान अवश्य करें। पानी का दान अधिक से अधिक करें। राहगीरों को पानी पिलाएं, केला तथा नारियल एवं आम का दान करें। गंगा स्नान एवं दान से दस प्रकार पाप नष्ट होते हैं जो जाने अनजाने में हमारे द्वारा हो जाते हैं। इनमें 3 कायिक, 4 वाचिक एवं 3 मानसिक पाप से मुक्त होते हैं। यदि तिल और जौ का दान करें तो यह 16,16 मुट्ठी होना चाहिए। अन्न दान का विशेष महत्व है। दूध और बताशा जल में डालकर दान करें।



## दशहरा की कथा:

अयोध्या के सूर्यवंशी राजा सगर थे उनके दो रानियां थी (1) केशनी (2) सुमति। केशनी के एक पुत्र असमंजस तथा सुमति के साठ हजार पुत्र थे। असमंजस तथा सुमति के पुत्र उदंड तथा दुष्ट प्रवृत्ति के थे। असमंजस के एक पुत्र था अंशुन, जो धार्मिक एक देव गुरु प्रवृत्ति का था। राजा सगर ने असमंजस को देश निकाला दे दिया तथा अंशुमन को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था।

राजा सगर ने अश्वमेघ यज्ञ किया तथा अश्व छोड़ दिया। अश्व को ढूंढने के लिए साठ हजार पुत्र निकले। पृथ्वी का कोना-कोना छान मारा, पृथ्वी से पाताल मार्ग खोद डाला अश्व नहीं मिला। अश्व को राजा इन्द्र ने कपिल मुनि के आश्रम में छिपा दिया था। इस बात से कपिल मुनि अनभिज्ञ थे, वे तप में लीन थे। राजा सगर के पुत्र कपिल मुनि के आश्रम पहुंचे तथा अश्व को वहां पर देख मुनि को अपशब्द कहे तथा दुर्व्यवहार किया। कपिल मुनि की तपस्या भंग हुई, उन्होंने श्राप देकर साठ हजार पुत्रों को भस्म कर दिया। गरुड़ जी ने इसकी जानकारी अंशुमन को दी तथा सारा वृत्तान्त सुनाया।

अंशुमन जी ने कपिल मुनि से विनय की तथा क्षमा याचना की, तब मुनि ने उनसे कहा आप घोड़ा ले जाकर अपने पितामह का यज्ञ पूरा करो। गंगा जी के जल से इन्हें मुक्ति मिलेगी, आप गंगा जी को धरा पर लाओ। राजा अंशुमन ने तपस्या की, उनका जीवन काल समाप्त हो गया। उसके बाद उनके पुत्र राजा भागीरथ थे, जिन्होंने अपने पितरों की मुक्ति के लिए दण्डकारण्य तीर्थ

में तपस्या की। ब्रह्मा जी प्रसन्न हुए तथा दर्शन देकर कहा मैं कमंडल से गंगा को मुक्त कर दूंगा। भागीरथ ने गंगा जी से प्रार्थना की, तब गंगा जी ने कहा पृथ्वी पर मेरा वेग कौन नियंत्रित करेगा। वेग नहीं रुका तो मैं रसातल में पहुंच जाऊंगी।

भागीरथ जी के उपाय पूछने पर ब्रह्मा जी ने कहा आप शिवजी की प्रार्थना करो कि वह अपनी जटाओं में गंगा जी को संभाल लें। भागीरथ जी की प्रार्थना पर शिवजी ने अपनी जटाओं को बांध लिया तथा ब्रह्मा जी ने अपने कमंडल से गंगा जी को छोड़ दिया। गंगा अपने पूरे वेग से आयी तथा शिवजी की जटाओं में समा गयी। ऐसा कहा जाता है कि गंगा जी को अहंकार था अपने वेग पर। उन्होंने कहा मैं शिव की जटाओं से एक पल में निकल कर भूलोक पहुंच जाऊंगी, परन्तु शिव जी ने उनका अहंकार तोड़ा। गंगा को निकलने के लिए मार्ग नहीं दिया, गंगा जी उनकी जटाओं में बहुत समय रही। तब भागीरथ जी ने फिर शिव की तपस्या की तथा मार्ग देने की प्रार्थना की, तब शिवजी ने अपनी जटा खोली।

जटा से निकलकर गंगा जी हिमालय पर्वत पर ब्रह्मा जी द्वारा निर्मित सप्तसरोवर पर गिरी, यहां से गंगा की सात धाराएं हो गईं। दिव्य रथ पर भागीरथ जी आगे-आगे तथा गंगा की धारा पीछे चल पड़ी, पृथ्वी पर प्रलय जैसा दृश्य हो गया। रास्ते में ऋषि जन्मु का आश्रम पड़ा। ऋषि की तपस्या में विध्न पड़ी तो उन्होंने गंगा को पी लिया तथा भागीरथ की प्रार्थना पर जांघ से निकाला, इसलिए जाहनवी नाम पड़ा। अंत में कपिल मुनि के आश्रम पहुंचकर भागीरथ जी के पितरों की भस्म

को अपने में समा लिया तथा उन्हें मुक्ति प्रदान की। गंगा भागीरथ जी के प्रयास से भूलोक आयी इसलिए गंगा भागीरथी कहलायी।

गंगा दशहरा को निर्जल व्रत रखा जाता है। व्रत करने वाला उस दिन उन्न ग्रहण नहीं करता। अगले दिन एकादशी की कथा तथा पूजन के बाद जल दान करने के बाद जल पीकर व्रत तोड़ता है। रात्रि जागरण भी करना चाहिए। गंगावतरण का वर्णन वायु पुराण, विष्णु पुराण, हरवंश पुराण, महाभारत, भगवत पुराण, वाल्मीकि रामायण में भी मिलता है।

## सरगुजा अंचल में उत्सव

गंगा दशहरा पर छत्तीसगढ़ के सरगुजा अंचल में जल प्रतिष्ठा समारोह के रूप में मनाया जाता है। कृषि प्रधान होने के कारण जल स्रोतों की पूजा-अर्चना की जाती है। महिलाएं कमलयुक्त सरोवर में पूजा-अर्चना करती हैं तथा इस दिन बच्चे की जन्म नाल को सरोवर में कमल की नींव में गाड़ती हैं। सरगुजा अंचल में कुंवारी कन्याओं द्वारा अपने घर वालों के सहयोग से कठपुतली का विवाह करने की प्रथा है। लड़कियां कठपुतली बनाकर विवाह की समस्त रस्में तीन दिन तक करती हैं तथा गंगा दशहरा के दिन उन्हें जल में विसर्जित कर देती हैं। नदियां प्राण दायिनी मानी जाती हैं इनमें देव नदी गंगा भारतीयों के जीवन में धार्मिक आस्था से जुड़ी है। गंगा दशहरे से वर्षा ऋतु का आगमन भी कहीं-कहीं हो जाता है। गंगा दशहरा को यदि गंगा स्नान संभव न हो तो किसी पवित्र जल या सरोवर में स्नान करें तथा गंगा जी का आवाहन करने से गंगा स्नान का फल प्राप्त होता है।



# भारतीय योग साधना- विश्व कल्याण की ओर

■ भूषण लाल पाराशर, अध्यक्ष, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

योग हमारे भारत देश के मनीषियों द्वारा दी गई एक अमर धरोहर है। इस विद्या को महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग के नाम से प्रचारित किया वे है- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान तथा समाधि। वास्तव में योग का शाब्दिक अर्थ है जोड़ना। योग द्वारा तन और मन का आपसी संतुलन बनता है एवं आत्मा का परमात्मा से मिलन। योग गुरु स्वामी रामदेव जी ने रजत शर्मा के टी.वी. चैनल के माध्यम से योग के प्रचार हेतु क्रांति ला दी है। भारतीय योग संस्थान (स्थापित अमृतलाल जी) भी योग प्रचार में ग्त 60 वर्षों से प्रातःकालीन कक्षायें तथा शिविर लगाकर प्रचार कर रहा है, बधाई के पात्र हैं आज विश्व में 90 प्रतिशत बीमारियां मन की चंचलता, व्यस्तता और

ऊंची उडान के कारण हैं। कहते हैं मन की गति प्रकाश से भी अधिक तेज होती है। योग साधना से मन को नियंत्रण में लाया जा सकता है, योग शिक्षा संस्थानों की शोध का यह प्रमाण है। विश्व की सबसे बड़ी संस्था U.N.O. ने भी योग को मान्यता देकर प्रत्येक वर्ष 21 जून को योग दिवस के रूप में मनाने को कहा है। वास्तव में यह हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का प्रयास है। मोदी जी नवरात्रों में उपवास करते हैं तथा नित्य प्रति योग करते हैं। साधारण जानकारी के रूप में योग और व्यायाम में काफी अन्तर है। विश्व के अनेक देश आज योग को अपना रहे हैं तथा योग साधना को अपने जीवन में उतारकर लाभान्वित हो रहे हैं। लोगों में उपवास रखने की आदत बन रही है।

हमारे ऋषि-मुनियों की देन से आज विश्व कल्याण की ओर अग्रसर हो रहा है।

योग साधना अथवा आसनों से शरीर शिथिल, शान्त तथा सांसों पर नियंत्रण करता है जबकि व्यायाम में तनाव युक्त रहता है। प्रत्येक योग आसन के बाद शरीर को हर दृष्टि से आराम मिलता है। योग साधना से एकाग्रता, अनुशासन, आत्मविश्वास, साहस, नैतिकता एवं मानवीय मुल्यों का विकास होता है। आसन खड़े रहकर, बैठकर, पेट के बल लेटकर तथा पीठ के बल लेट कर किये जाते हैं। ताड़ आसन, सूर्य नमस्कार आसन, वृक्षासन, भुजंगासन खड़े हो कर किये जाते हैं। वज्रासन बैठ कर किया जाता है जिससे भोजन शीघ्र पचता है। पेट के बल वाले आसन प्रायः पेट







के रोगों को ठीक करते हैं तथा पीठ के बल वाले आसन कमर एवं पीठ के रोगों को ठीक करते हैं। प्राणायाम वास्तव में हमारे शरीर का भोजन है। कपालभाति, अनुलोम-विलोम तथा भ्रामरी प्राणायाम करने से स्मरण शक्ति, सहजता, शान्ति प्राप्ति के साथ रक्तचाप, मधुमेह एवं मोटापा आदि घटते हैं। पीठ के बल लेते हुये श्वासन किया जाता है जिससे शरीर में शिथिलता/आराम मिलता है। योग गुरु बाबा राम देव जी प्राणायाम करने पर विशेष बल देते हैं और इनके करने से लोगों ने रोगों पर नियंत्रण किया है।

### “योग: कर्मसु कौशलम्”

निरन्तर योग अभ्यास करने से कार्य में कुशलता प्राप्त होती है। योगियों में सरलता, सहजता, समता तथा सेवा भाव पाया जाता है। योग आसन, प्राणायाम तथा ध्यान करने से जीवन में सफलता मिलती है। आज के अत्याधिक तनावयुक्त, मोबाइल, कम्प्यूटर युग में यापे साधना अपना अनिवार्य होना चाहिये। अपने कार्यालय में काम करते-करते थक जाने पर, कुर्सी पर बैठे-बैठे तार आसन से लाभ मिलता है। सारे शरीर को पैरों से लेकर सिर तक जकड़ें, फिर तुरन्त छोड़ दें।

योग आसन एवं प्राणायाम प्रातः काल खाली पेट के साथ ही करना चाहिये। यदि प्रातः काल समय न मिले, सायंकाल भी खाली पेट कर सकते हैं। योग साधना का मुख्य लक्ष्य सासों पर नियंत्रण करना है। हम प्रायः 1 मिनट में 13 से 15 सांस लेते हैं। हमें लम्बे तथा गहरे सोस इस प्रकार लेने चाहिये जिससे 1 मिनट में 5 सांस ही ले सके। हम जानते हैं कि कुत्ता जल्दी-जल्दी सांस लेता है तथा उसका जीवन काल 8-10

वर्ष होता है। तनाव (Tension) के समय प्रायः सांस तेज गति से चलता है। इसे नियंत्रण करना आवश्यक है। रक्तचाप/तनाव कम करने की तीन विधियाँ हैं- Instant Relief Technique, iQuick Relief Technique तथा Deep Relaxation Technique. Instant Relief Technique में खड़े होकर अथवा कुर्सी पर बैठे-बैठे पूरे शरीर को पैरों से लेकर हाथों को सिर पर ऊपर खींचते हुये 20 सेकन्ड लगाते हैं और फिर तुरन्त 40 सेकन्ड में आरामदायक स्थिति में कर लेते हैं। iQuick Relief Technique में पीठ के बल लेटे-लेटे 3 मिनट का श्वासन करते हैं।

आज का जीवन अस्त-व्यस्त हो चुका है। व्यक्ति इतना व्यस्त हो चुका है कि अपने शरीर को देखने का कोई समय नहीं देता है। खान-पान, रहन-सहन, विचार-व्यवहार, पहनना, सोचना, वाहन प्रयापे आदि सब में परिवर्तन दिखाई देता है। प्रकृति का दोहन अत्याधिक गति से हो रहा है। विश्व में ग्लोबल वार्मिंग का खतरा मंडरा है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण जीवन जीने की गुणवत्ता समाप्त हो रही है। भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सितम्बर 2014 में संयुक्त राष्ट्र संघ को अपने संबोधन में सचेत कर इस संकट की ओर ध्यान दिलाया है। उन के प्रयासों फलस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को प्रति वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का निर्णय लिया है। विश्व के 190 देशों ने 21 जून को योग साधना के अभ्यास एवं गोष्ठियों के माध्यम से जहाँ जन मानस अपने शरीर को रोग मुक्त एवं तनाव मुक्त बना पायेगा, वहाँ पर्यावरण सम्बंधी समस्याओं पर भी काबू पाने में

सहायता एवं जागरुकता मिलेगी। विश्व कल्याण की दिशा में यह मील का पत्थर सिद्ध होगा। भारत के मनीषियों की इस अमर धरोहर जग में नाम होगा, जो हम भारतियों के लिए गर्व की बात है।

योग एक स्वस्थ जीवन जीने की कला है। माता-पिता बच्चों में योग विद्या सीखने का प्रबन्ध कर निम्नलिखित गुणों को विकसित करने में पहल करें:-

- आपके बच्चों में अच्छे संस्कारों का सृजन हो।
  - आपके बच्चे सदैव प्रसन्नचित रहें।
  - आपके बच्चे सबका आदर करें।
  - आपके बच्चे परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करें।
  - आपके बच्चों का कद बढ़े।
  - आपके बच्चे टी.वी. पर केवल चुने हुए कार्यक्रम ही देखें, निरन्तर न बैठें।
  - आपके बच्चों में आत्म विश्वास बढ़े।
  - आपके बच्चे अच्छे नागरिक बने।
  - आपके बच्चे आपका कहना माने तथा आज्ञाकारी बनें।
  - पास-पड़ोस वाले आपके बच्चों की प्रशंसा करें।
  - आपके बच्चे बिना चश्मे के पढ़ें तथा आंखों का योग-व्यायाम करें।
  - आपके बच्चों का स्वास्थ्य ठीक रहे।
  - आपके बच्चों का खन-पान ठीक हो
  - आपके बच्चे कम्प्यूटर का सदुपयोग करें।
  - आपके बच्चों का दृष्टिकोण सकारात्मक हो।
- आदर्श जीवन हेतु योग द्वारा नित्य साधना का ब्योरा-समय सारणी (Time Table)



### जीवन उद्धार का नित्य विचार:-

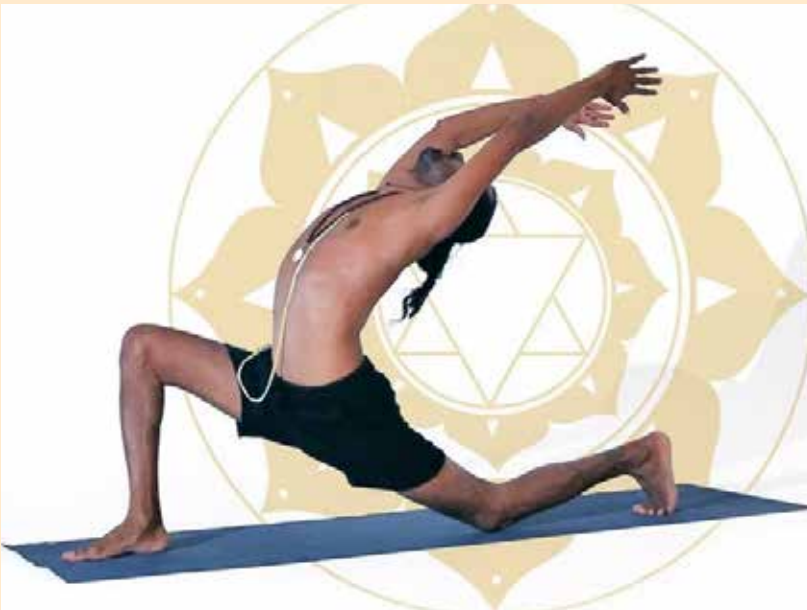
1. जल्दी सोना, जल्दी उठना क्यों लाभकारी। Early to Rise and Early to Bed, Makes the man Healthy, Wealthy & Wise.
2. प्रातः उठकर माता-पिता को प्रणाम करना। रामायण का दोहा है- “प्रातःकाल उठि कै रघुनाथा, मातु पिता गुरु नावहिं माथा”
3. उठते ही अपने हाथों के दर्शन करक विचार करें। हथेली के अगले भाग में लक्ष्मी, मध्य भाग में सरस्वती तथा मूल में साक्षात ईश्वर विराजमान हैं। अतः जागने पर अपनी हथेलियों को देखते हुये यह भाव लायें।
4. पृथ्वी पर पैर रखने से पहले दायें हाथ से पृथ्वी स्पर्श करते हुये मन ही मन प्रणाम करें।
5. एक-दो गिलास ताजे पानी में नीबू-शहद डाल कर पीयें, जो पेट को साफ करने में अत्यंत लाभदायक है।

6. अपने सांसों पर ध्यान केन्द्रित करें।
7. विपश्ना अपनायें, कुछ न बोलना, कुछ न सुनना, कम हिलना द्रुकम-से कम 2-3 घंटेऋ।
8. जीवन में शिथिलता लायें, सदैव सांसों पर ध्यान रखें।
9. बिस्तर की सलवटें सीधी करें तथा चादर आदि की तह बनाकर रखें।
10. अपना बैग तथा पहनने वाले कपड़े सोने से पहले तैयार करके निश्चित स्थान पर रख लें।
11. सोने से पूर्व पांच मिनट के लिए आपने जो कार्यक्रम बनाया था उसके अनुसार पढाई की थी या नहीं, यी सोचे। अगर नहीं की तो संकल्प करें कि कल कार्यक्रम के अनुसार पूरा काम करेंगे तथा प्रात-जिस समय उठना है उसका मन विचा करते हुये सो जायें।
12. कम से कम एक समय भोजन परिवार के साथ मिलकर करें।
13. भोजन जो बना हो घर में करें तथा प्रसन्न होकर करें, कोला, पेप्सी,

- आदि के स्थान पर नीबू पानी या कच्चे नारियल का पानी पीयें।
14. भोजन के समय टी.वी. न देखें।
15. धरती पर बैठकर भेजन करें।
16. सदैव सत्य बोले।
17. जीवन का लक्ष्य निर्धारित करें।
18. डायरी में अपने जीवन की महत्वपूर्ण बातें लिखें।
19. दूसरों की मदद करें।
20. चेहरे पर सदैव मुस्कान रखें।
21. सहयोगी बनें।
22. दूसरों के अच्छे गुणों की प्रशंसा करे तथा अपने जीवन में अपनायें।
23. अपनी गलतियों पर नजर रखें तथा उनको ठीक करने का प्रयास करें।
24. समय की पाबंद रहें तथा समय का अनुशासन अपनायें।
25. निडर बने तथा तनाव मुक्त रहें।
26. योग केन्द्र तथा अपने स्कूल में नियमित जायें।
27. भेजन के प्चात दांत साफ करें।
28. आंखों को वाश कप से धोंयें।
29. ईमानदारी बहुत बडा गुण है, इसे अपने जीवन में ढालें।
30. सादा जीवन, उच्च विचार रखें।
31. नहा कर साधना, यापे, प्राणायाम करें।

### बालकों में चर्चा के विषय ( आपस में अथवा माता-पिता संग )

1. मनोबल की वृद्धि के उपाय।
2. स्मरण तीव्र कैसे हो।
3. सकारात्मक दृष्टिकोण कैसे विकसित करें।
4. तनाव पर नियंत्रण।
5. एकाग्रता कैसे बने।
6. मन शांत कैसे हो।
7. भय, चिन्ता, निराशा से मुक्ति।
8. मन की शान्ति के उपाय।





9. दोनो समय आरती-साधना करें।  
10. अपने भविष्य में क्या बनना है, इस पर विचार करते रहें।

### भोजन और प्राण

जितनी भूख हो, उससे थोड़ा कम खायें। इसका एक बहुत सुन्दर मापदण्ड है। अपने आमाशय को आधा भोजन से भरें, एक चौथाई पानी के लिए स्थान रखें और शेष वायु के लिए जगह छोड़ें। चबा-चबा कर खाना आवश्यक है। भोजन को इतना चबायें कि वह बिल्कुल तरल बन जाये। तभी हम उससे प्राण ग्रहण कर पायेंगे। जो हम खाते हैं केवल वही भोजन नहीं है-शवास द्वारा जो वायु अन्दर जा रही है, पानी जो हम पी रहे हैं। सूर्य की रश्मियां जो हम ग्रहण कर रहे हैं ये सब हमारा भोजन है। सूर्य की रश्मियों से वायु से जो हमें प्राण शक्ति मिलती है, हम जो खाते हैं उसमें भी जल, ताप और वायु के मिश्रण से प्राण का सृजन होता है।

भोजन का प्राण एवं विचारों से सीधा सम्बंध है। भोजन को आंख से देखें, नासिका से सूंघें तथा जिहवा से स्वाद का अनुभव करें। भोजन से पूर्व तीन बार दांयी हथेली से थोड़ा पानी लेकर आचमन करें। इससे कंड़ से लेकर

आमाशय तक कोई रुकावट नहीं रहती। इसी समय एकाग्रता के लिए मन्त्रोच्चारण भी कर सकते हैं। भोजन में सलाद व हरी सब्जियों का अधिक प्रयापे लाभकारी है। आवश्यकता से एक फुल्का कम खायें। भोजन नीचे बैठकर करें तो अधिक लाभ होगा।

### उपवास तथा आन्तरिक शुद्धि

शरीर में आन्तरिक वृद्धि के लिए “उपवास” से बठकर दूसरा कोई उपाय नहीं है। जब हम दिन भर काम करते हैं तो हमें विश्राम की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार जब हम दिन में तीन चार बार भोजन करते हैं तो हमारे पाचन तंत्रों को भी आराम की आवश्यकता होती है, वह उपवास से ही सम्भव है। उपवास वास्तव में आकाश तत्व ही है। उपवास का अर्थ है स्वयं पर नियंत्रण, इन्द्रियों पर संयम, इच्छाओं पर नियंत्रण। उपवास को व्रत के नाम से भी जानते हैं। व्रत का अर्थ है कोई भी संकल्प लेना। अंग्रेजी में उपवास को Fast कहते हैं, थेंज का अर्थ है तेज या मजबूत इरादा (Will Power)।

5 इन्द्रिया तथा 5 कर्मइन्द्रियां इनका भोजन हैं। इनके भोजन को भी रोकना उपवास है। मन इन्द्रियों का राजा है, मन

का भोजन विचार है। इन विचारों को रोकना उपवास है। मन के शत्रु काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को रोकना उपवास है।

हमारे पूर्वजों ने उपवास करने के लिए धार्मिक भावनाओं से जोड़े रखा था। उसके पीछे उनकी नीयती कल्याणकारी थी। सप्ताह में एक दिन उपवास रखने पर पाचन तंत्र को विश्राम मिलता है, अनेकों रोग ठीक हो जाते हैं। हमें शरीर को निरोगी रखने के लिए सप्ताह में एक दिन उपवास अवश्य रखना चाहिए। पाचन तंत्र को सप्ताह में एक दिन विश्राम मिलने पर यह दुगुनी शक्ति एवं स्फूर्ति से कार्य करने लगता है। उपवास रखने से तन व मन की शुद्धि निश्चित है। उपवास की महिमा बहुत बडी है, उपवास रोग निवारक के साथ-साथ शक्तिवर्धक भी है। उपवास से शरीर के विष बाहर निकलते हैं। उपवास में दूध तथा फलों का सेवन लेना लाभदायक है। आज विश्व में 90: बीमारियां मन की अधिक व्यस्तता के कारण हैं। च्लेबीवउमजतपबा।पसउमदजे अतः मन को शांत रखना ही आदर्श जीवन जीने का मंत्र है। मन की दासता सबसे बडी नीचता है। इसे मत दौड़ने दो, शान्त रखें। □

## तलवार और ढाल में अंतर

लुहार ने लोहे को गलाया और उसी लोहे से एक तलवार बनाई व एक ढाल। दोनों को एक योद्धा ने खरीद लिया। युद्ध के मैदान में दोनों साथ ही जाती। योद्धा ने कई युद्ध लड़े और एक दिन बीच मैदान में जब उसने वार किया तो तलवार टूट गई। उस टूटी तलवार ने ढाल से कहा- हम दोनों एक ही लोहे के बने हैं, एक ही साथ जन्मे हैं, लेकिन तुम अभी भी साबुत हो और मैं जीवन की आखिरी घड़ियां गिन रही हूं। ऐसा क्यों है? ढाल ने कहा - तुममें और मुझमें एक बुनियादी फर्क है। तुम लोगों को मारने का काम करती हो और मैं लोगों को बचाने का। मेरे साथ बचने वालों की दुआएं होती हैं और तुम्हारे साथ मरने वालों की बददुआएं। बात खत्म होती इसके पहले ही तलवार कबाड़े में जा चुकी थी। □



# खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी

## ■ आचार्य मायाराम पतंग

18 जून को महारानी लक्ष्मी बाई का बलिदान दिवस है। जो जन्मते हैं, वे सभी मरते हैं परन्तु जो किसी लक्ष्य के लिए अपने देश (मातृभूमि) या स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते हुए संसार त्यागते हैं, उनकी मृत्यु बलिदान कहलाती है। वे अपना नाम अमर कर जाते हैं। उनका यश पीढ़ियों तक गाया जाता है। उनके यश की अमर गाथा प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने गाई। लक्ष्मीबाई के साथ उनके यश की गाथा (कविता) भी अमर हो गई।

**चमक उठी सन सत्तावन में  
वह तलवार पुरानी थी।  
बुन्देले हर बोलों के मुंह  
हमने सुनी कहानी थी।  
खूब लड़ी मर्दानी वह तो  
झाँसी वाली रानी थी॥**

1857 के स्वतंत्रता संग्राम को ब्रिटिश सरकार ने 'गदर' नाम दिया था। एक सैनिक विद्रोह कहा था। सच्चाई छिप नहीं पाई। सावरकर जैसे साहित्यकारों ने उजागर कर दिया कि वह भारतीयों का स्वतंत्रता के लिए संग्राम ही था जो साधनों के अभाव में सफल नहीं हो पाया। रानी लक्ष्मीबाई इस स्वतंत्रता समर की नेत्री थीं। उनकी वीरता ने जनमानस को अत्यधिक प्रभावित किया। देश की आजादी के लिए उन्होंने अपना तन, मन, धन जीवन सब कुछ बलिदान कर दिया। कोई देशभक्त झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम कैसे भूल सकता है?

19 नवम्बर, 1835 में जन्मी लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम मनु

था। महाराष्ट्र प्रान्त में बाई नामक गांव कृष्णा नदी के तट पर बसा है। श्री मोरोपंत इनके पूज्य पिता थे तथा श्रीमती भागीरथी बाई इनकी जननी थीं। पिता मोरोपंत बाजीराव पेशवा के यहां कार्य करते थे। पेशवा के पुत्र नाना साहब तथा राव साहब के साथ मनु की शिक्षा का प्रबंध किया गया था। यद्यपि मनु दोनों से छोटी थी परन्तु हर कार्य में उनकी

होड़ करती थीं। घुड़सवारी, तीर, तलवार, बन्दूक आदि चलाने में बचपन में ही कुशलता प्राप्त कर ली थी।

एक बार झाँसी के राजा गंगाधर राव पेशवा से मिलने आए। मनु को देखकर वे प्रभावित ही नहीं मोहित हो गए। उन्होंने विवाह का प्रस्ताव किया। मोरोपंत (पिता) को मनु की बचपन की एक घटना याद आ गई। एक बार







नाना साहब ने मनु को अपने हाथी पर नहीं बिठाया था। तब उन्होंने कहा था कि हाथी पर बैठना हमारे भाग्य में नहीं है। मनु बाई ने कहा था, है, मेरे भाग्य में है, मेरे भाग्य में एक नहीं अनेक हाथियों की स्वामिनी होना लिखा है। मनु की सगाई महाराज गंगाधर राव से कर दी गई। बड़ी शान-शौकत से मनु झांसी में रानी बन कर पहुंची। उनका नाम लक्ष्मीबाई रख दिया गया। झांसी में घर-घर खुशी मनाई गई।

साल भर में ही लक्ष्मी बाई ने एक पुत्र को जन्म दिया परन्तु वह तीन मास में ही काल कवलित हो गया। राजा गंगाधर राव को जितना हर्ष हुआ था, वह उतने ही गहरे शोक में डूब गए। वह इतने बीमार हुए कि अधिक दिन तक जीवित न रह सके। मृत्यु से पूर्व उन्होंने एक पुत्र को गोद ले लिया था। उसका नाम दामोदर राव था।

राजा गंगाधर राव के निधन पर अंग्रेजों के द्वारा रानी पर दबाव डाला गया कि राज्य की बागडोर ब्रिटिश कम्पनी को सौंप दें। रानी लक्ष्मीबाई शासन विधि विधान से चला रही थीं। अपने स्वभाव तथा कार्यशैली से जनता में उन्हें भारी लोकप्रियता मिली थी। किले में उन्होंने महिलाओं की भी एक सेना खड़ी कर ली थी जिसे घुड़सवारी तथा शस्त्र संचालन का प्रशिक्षण दिया गया था।

रानी ने अंग्रेजों की अधीनता मानने से साफ इंकार कर दिया। अंग्रेजों का शत्रु बन जाना स्वाभाविक था। सर हयूरोज के सेनापतित्व में अंग्रेजों की भारी सेना ने झांसी पर आक्रमण कर दिया। रानी ने स्वयं सेना की कमान संभाली। अंग्रेज झांसी में नहीं घुस पाए। तांत्या टोपे की सेना भी रानी झांसी की मदद करने आई।

अंग्रेजों की विशाल सेना के सामने वह असफल रही। झांसी को चारों ओर से घेर लिया गया। रानी छतों और मुख्य द्वार पर स्वयं जाकर निगरानी करतीं। एक दिन गौस खां नामक सेनानायक अंग्रेजों से मिल गया। उसने पश्चिमी द्वार को खोल कर अंग्रेजी सेना को मार्ग दे दिया। अंग्रेजी सेना ने असावधान अवस्था में किले में मारकाट मचा दी। रानी अपने साथ कुछ विश्वस्त सैनिकों को तथा काना, मुंदड़ा सैनिक सखियों को लेकर किले से निकल पड़ीं। रानी कालपी आई फिर ग्वालियर की ओर बढ़ गईं। अंग्रेज पीछा करते रहे। रानी निरन्तर लड़ती हुई सैकड़ों मील गईं। ग्वालियर पहुंच कर एक नाला सामने आ गया। घोड़ा अड़ गया। इतने में अंग्रेजों की टोली आइ गई। रानी के सभी सैनिक मर चुके थे। रानी का भी कंधा घायल था। दोनों हाथों में तलवार लेकर रानी लड़ीं और सारे अंग्रेज सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। रानी को पता था कि कुछ ही समय बाद अंग्रेजी सेना की कोई अन्य टुकड़ी पहुंच जाएगी। रानी अपने शरीर को अंग्रेजों का स्पर्श नहीं होने देना चाहती थीं। अतः रानी ने स्वयं को ही तलवार से मारकर प्राण दे दिए। सखियों ने तुरन्त रानी का शव पास ही बनी साधु योगादास जी की कुटिया में पहुंचाया। साधु भी सच्चे देशभक्त थे। उन्होंने शव का दाह-संस्कार सम्पन्न कर वहां रानी लक्ष्मी बाई की समाधि बना दी।

स्वतंत्रता के लिए बलिदान देने वाली रानी लक्ष्मीबाई वन्दनीय हैं। हमें उनके जीवन से साहस, युद्ध कौशल तथा बलिदानी भावना से प्रेरणा लेनी चाहिए। श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान के शब्दों में -

जाओ रानी याद रखेंगे  
ये कृतज्ञ भारतवासी।  
यह तेरा बलिदान जगावेगा  
स्वतंत्रता अविनाशी।।  
होवे चुप इतिहास,  
लगे सच्चाई को चाहे फांसी।  
हो मदमाती विजय मिटा दे  
गोलों से चाहें झांसी।।  
तेरा स्मारक तू ही होगी  
तू खुद अमित निशानी थी।  
बुन्देले हर बोलों के मुंह  
हमने सुनी कहानी थी।  
खूब लड़ी मरदानी वह तो  
झांसी वाली रानी थी। □

## नयन निहारे

— सरोजिनी चौधरी

नयनन माहिं बसौ प्रभु मेरे  
अँखियाँ तेरो ही रूप निहारे  
मध्य साँझ हो चाहे सबेरा  
शैशव रूप उर माहिं विराजे,

तुमक चलत पग पैजनि बाजे  
पील झिगोला अति भल लागे  
श्याम रूप राम को प्यारो  
काजल टीका मात लगावे,

दतियाँ दमकैँ दुति दामिनि ज्यों  
किलकत प्रभु बाल विनोद करें  
करताल बजाई के नाच रहे  
अति सुंदर सोहत धूरि भरे,

निखिल विश्व के तुम रखवारे  
यह तन माटी आप सँवारे  
शांत स्वच्छ हो मन यह मेरा  
कर्म वचन मन माहिं विराजो। □



# बच्चों को उत्तम बाल-साहित्य सौंपिए

## ■ गंगा प्रसाद 'सुमन'

स्कूल और कॉलेज में मई मास से ग्रीष्मावकाश हो जाते हैं। अभिभावकों को चाहिए कि इन अवकाशों का सद-उपयोग करते हुए विभिन्न प्रकार के मनोरंजन के साथ-साथ बाल व किशोरों को ज्ञानार्जन के लिए उपयोगी पुस्तकें उनके हाथों में सौंपें। भावी पीढ़ी के लिए ऐसा बाल साहित्य प्रेरणास्वरूप होना चाहिए जिससे उनके कोमल मस्तिष्क में नैतिक, बौद्धिक, चारित्रिक व राष्ट्रीय भावों के विकास में अभिवृद्धि कर सकें। जीवन समर्पित करने वाले महापुरुषों से ज्योति प्राप्त कर सकें। बच्चे कच्चे घड़े समान हैं। जैसा रूप-रंग-चित्र उनमें भरेंगे वही स्थाई भाव से संस्कार रूप धारण कर लेगा। बाल साहित्य की गणना स्कूल की पुस्तकों से पृथक होती है। जिस साहित्य को बड़े लोग बाल-साहित्य मान रहे हैं, यह आवश्यक नहीं है कि वह बालकों की कसौटी पर खरा ही उतरे। किसी भी विषय को सरल भाषा में लिख देना ही बाल-साहित्य की श्रेणी में नहीं गिना जा सकता। बच्चों का बचपन, जीवन मूल्य, संवेदनाएं और उनका मनोविज्ञान समझना नितान्त आवश्यक है। बच्चों का संसार अनोखा ही होता है। उनका आयु वर्ग, वर्तमान ज्ञान, मानसिक स्तर और तत्कालीन परिस्थितियों के अनुकूल बाल-साहित्य की संरचना होनी चाहिए।

इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश करता हुआ आज का समाज आधुनिक जीवन, नई टेक्नोलॉजी, ज्ञान-विज्ञान बच्चों के कोमल मन-मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं। उनके दिल और दिमाग को सही

दिशा मिले। उनकी सुसुप्त प्रवृत्तियों को उद्बुद्ध किया जाए। इस महत्वपूर्ण भूमिका को निर्वाह करने के लिए त्रिकोण रूप में माता-पिता, शिक्षक और लेखक का उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है कि ये पथ-प्रदर्शक किस प्रकार का साहित्य राष्ट्र के भावी कर्णधारों को परोस रहे हैं। बाल-साहित्य को दो भागों में बाँट सकते हैं :-

1. नैतिक या सामाजिक, शिक्षा देने वाला साहित्य 2. सूचनात्मक बाल-साहित्य जो ज्ञान-विज्ञान और वर्तमान परिस्थितियों से परिचय कराए। आज के समय में नैतिक शब्द अपना अर्थ व महत्व खो चुका है। नैतिक आदर्शों की धज्जियां कदम-कदम पर उड़ाई जा रही हैं। जब बच्चों के पथप्रदर्शक ही अनैतिक मूल्यों में आकंठ डूबे हुए हों तब अपने लाडले को भला क्या सीख दे पाएंगे? जब एक पिता अपने सपूत से कहता है, बेटा, तुम स्कूल से अपने साथी की पेंसिल क्यों चुरा लाए, मैं अपने दफ्तर से ही ले आता, चोरी करना बुरी बात है। इस प्रकार का उनका चरित्र भला क्या सीख दे पाएगा। उपदेश देने की उपेक्षा जीवन के व्यावहारिक आदर्श महत्वपूर्ण हैं।

आज के बाल-साहित्य का लेखक रटे-रटाए पाठ, घिसी-पिटी रचनाएं लिखकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेता है। परियों, राजा-रानी और सामन्तियों की कथाओं में भोले-मन को भरमा दिया जाता है। यद्यपि इनका भी अपना महत्व है। बच्चों के लिए जीवन-मूल्य, काँटों में भी फूल सा मुस्कराना, शौर्य गाथाएं, धर्म,

समाज व राष्ट्र पर प्राण न्योछावर करने के प्रकरण, अंध परम्पराओं और कुरीतियों से जूझने का विवेक, नैतिकता से भरपूर साहित्य रचा जाए और उन्हें सौंपा जाए।

कथा, कहानी, उपन्यास से हटकर सृजनात्मक या ज्ञान-विज्ञान का साहित्य आता है जो सूचना और यथार्थ पर आधारित है। बच्चों को कथात्मक शैली में रोचक चित्रों द्वारा जानकारी प्रदान करना और उनके प्रश्नों के समुचित उत्तरों से समाधान करना है। तभी ये अबोध बालक भविष्य में साहित्यकार, इतिहासकार, कलाकार, दार्शनिक, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, शिक्षाशास्त्री आदि की भूमिका निभा सकेंगे। बच्चों को उनकी रुचि अनुसार पुस्तकें उनके हाथों में जाएं अन्यथा बलपूर्वक थोपे गए विषयों की पुस्तकों के प्रति उनमें अरुचि उत्पन्न करेगी जिससे उनकी शक्ति व समय का हास होना स्वाभाविक है। वैसे तो स्कूल के पुस्तकालयों में बाल-साहित्य न्यून मात्रा में ही है और जो भी है उसे पढ़ने के लिए शिक्षकों द्वारा बच्चों को प्रेरित नहीं किया जाता। शिक्षकों को अपने-अपने विषयों के केवल परीक्षा फल का प्रतिशत बढ़ाने की चिन्ता रहती है। प्रबुद्ध लेखक, प्रकाशक, माता-पिता और शिक्षकों के लिए विचारणीय विषय तो यह है कि उत्तम बाल-साहित्य किस प्रकार तैयार होकर बच्चों के हाथों में पहुंचे। उनकी रुचि के अनुसार पुस्तकें व पत्रिकाएं उन्हें मिल सकें। स्कूली पुस्तकों से इतर ज्ञान वर्धक, मनोरंजक, रोचक व सचित्र बाल-साहित्य नौनिहालों को उपलब्ध कराएं। □

# देश सेवा में लगा है सेवाधाम

## ■ प्रतिनिधि

दिल्ली के मंडोली इलाके में सेवाधाम विद्या मन्दिर जुलाई, 1988 से निरंतर कार्य कर रहा है। सेवाधाम 10 से 18 वर्ष तक की आयु के छात्रों के लिए समरसता की प्रयोगशाला और शोधशाला के रूप में कार्यरत है।

अनेक बोलियों, भाषाओं, खानपान और विविध वेशभूषा के छात्र कक्षा, आवास, भोजनालय तथा खेल के मैदान में सगे भाइयों की तरह एक-दूसरे के सहयोग से सर्वांगीण विकास में सात वर्ष (कक्षा छठी से बारहवीं) तक शिक्षा और दीक्षा में समरस रहकर अपने उद्देश्य को प्राप्त करते हैं। नागालैण्ड, मणिपुर,

मिजोरम, असम तथा झारखण्ड के छात्र इसके जीते जागते उदाहरण हैं।

सेवाधाम की सहज दिनचर्या में समय पालन, स्वावलम्बन के माध्यम से नेवी, सेना आदि जैसे कठोर प्रशिक्षण में भी छात्र हताश नहीं हुए। जिसमें मोहन सिंह, सुरेन्द्र गिरि, हरेन्द्र टोप्पो, निरंजन महतो, हिंदुसोय मुण्डारी, सुनील कुमार, पंकज, राजेश कुमार, वीरेन्द्र आदि छात्र सेना में अधिकारी बने।

वंचित बंधुओं के बालकों को समाज की मुख्यधारा में समरस करने का काम सेवाधाम बहुत ही सिद्धता से कर रहा है। छात्रों में पूर्वजों की गौरव गाथाएँ तथा उनकी जयन्तियाँ मनाने से

छात्र स्वाभिमानी बने हैं। अगर ये छात्र यहाँ न होते तो नक्सलवाद, आतंकवाद जैसी देश की विघटनकारी शक्तियों के साथ होकर राष्ट्र की समरसता से दूर हो सकते थे।

यहाँ रहने वाले अहिन्दी क्षेत्रों के बालकों में राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम जागृत हुआ है। ताई तुगुंग, हामनी भाग्य जमातिया आदि छात्र अपने क्षेत्र में हिन्दी अधिकारी बने हैं। बंगलादेश से निकाले गए अनेक चकमा बंधु आज भी अरुणाचल प्रदेश के शरणार्थी शिविर में रहते हैं, जिन्हें भारत की नागरिकता तक नहीं मिली है। इस संवेदनशील मार्मिक विषय को





कार्यकर्ताओं ने समझा ही नहीं, बल्कि वहाँ के अनेक छात्र जैसे उत्तम चकमा, निवारण चकमा, ज्योति कुसुम चकमा आदि छात्र सुशिक्षित होकर स्वावलंबी बने हैं। सेवाधाम में पढ़ने वाले शांति जीवन चकमा और मिलन चकमा डॉक्टर बन चुके हैं।

सेवाधाम आने से पूर्व बालकों में क्षेत्रवाद, भाषावाद बहुत अधिक होता है। यहाँ उन्हें व्यापक दृष्टिकोण मिलता है और वे कछ से कछार और कश्मीर से कन्याकुमारी तक को अपना मानने लगते हैं। इसके बाद एक-दूसरे की भाषा का सम्मान करना एवं अनेक भाषाएँ सीखना यहाँ के छात्रों का स्वभाव बन जाता है।

विद्यालय की दिनचर्या से छात्रों में गुरु-शिष्य परम्परा में श्रमदान, प्रकृति संरक्षण, जल संरक्षण, उद्यान वाटिका आदि विकसित करने की आदत बनी है। जिससे छात्रों ने आनन्द की अनुभूति करके प्रकृति की समरसता का संतुलन

बनाया है।

गोधूली, संध्या वंदना जिसमें गीता पाठ, हनुमान चालीसा, रामचरित मानस पाठ पढ़ने से उसके आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण में समन्वय तथा परिवार की परम्पराओं के संरक्षण हेतु संस्कार की आधारशिला सशक्त बनी है। साथ ही आस्तिक भावना का निर्माण हुआ है। जिनके गाँव में गीता, रामायण का कोई नामोनिशान नहीं था, वहाँ के बालक गीता के कई अध्याय कंठस्थ करके अपने घरों में गीता लेकर गए हैं तथा वहाँ के समाज को धर्मांतरण से सजग कर रहे हैं।

भौगोलिक एकात्मता का जीवन दर्शन यहाँ छात्र को सात वर्ष तक दृष्टिगोचर होता है। आचार्यों के व्यक्तित्व और कृतित्व से बालकों में सदगुणों की प्रेरणा की छाप पड़ती है।

मानवीय गुणों के विकास में आहार की सात्विकता निहित है। इसी आधार पर छात्रों ने सहज रूप से मांसाहार

छोड़ा है। उनमें सात्विक रूप से शरीर मन का विकास हुआ है। अपने क्षेत्र में मांसाहार छोड़ा भी रहे हैं। इससे छात्रों में विध्वंसात्क प्रवृत्ति के स्थान पर सृजनात्मक प्रवृत्ति का विकास हुआ है, जो समरस समाज के निर्माण में सहायक है।

सेवाधाम के चिकित्सालय में अस्वस्थ छात्र की सेवा में उनको दवा, परहेज, चिकित्सा यहाँ तक कि उनके वस्त्र आदि को धोने की दैनिक संभाल उसके सहपाठी मित्र बिना किसी सूचना या आदेश के सगे भाई की भांति करते हैं। यहाँ उनकी सामाजिक सोच में बदलाव आया है।

ब्रह्म मुहूर्त बेला में 60 प्रतिशत छात्र स्वयं जगकर सभी छात्रों को जगाकर 5:30 बजे प्राणायाम योग एवं शारीरिक व्यायाम आचार्यों के साथ करते हैं। यह आदत छात्रों के भविष्य की पूँजी बनी है, जिसमें स्वस्थ भारत का भविष्य छिपा है। □





25



सेवा

संस्कार

समरसता

समृद्धि



सेवा भारती

## सेवाधाम विद्यामन्दिर

प्रधानाचार्य: 7042782164  
दूरभाष: प्रबन्धक : 8588860846

वरिष्ठ माध्यमिक (आवासीय) विद्यालय

पोस्ट मंडोली दिल्ली - 110093

e-mail : sbsewadham@yahoo.com

दिनांक: 13/05/2024

## CBSE RESULT 2023-24

## Class X

S.No.	Roll No.	Name	English	Sanskrit	Maths	Science	Social Science	I.T.	Total	%	Hindi (Additional)	Position
1.	21196654	Ayush Debbarma	71	71	33	40	86	68	369	61.50	85	
2.	21196655	Kwrwng Jamatia	54	59	26	36	51	60	286	47.67	69	
3.	21196656	Ningthoujam Nidison Singh	56	61	40	55	60	63	335	55.83	67	
4.	21196657	Ningthoujam Nungsiba Meitei	35	53	24	28	44	63	247	41.17	38	
5.	21196658	K. Parveen Kumar Sharma	68	61	46	47	55	71	348	58.00	58	
6.	21196659	Kuldeep Pradhan	73	79	53	57	76	71	409	68.17	88	
7.	21196660	Aman Katiyar	55	73	34	27	77	61	327	54.50	83	
8.	21196661	Dinesh Mahto	82	96	89	89	92	82	530	88.33	94	3 <sup>rd</sup>
9.	21196662	Basudev Mahato	77	100	76	79	93	85	510	85.00	89	
10.	21196663	Sanjeev Kumar	58	80	51	59	81	77	406	67.67	80	
11.	21196664	Milli Bai	64	52	48	49	51	77	341	56.83	51	
12.	21196665	Bini Tulu	48	62	38	27	50	65	290	48.33	67	
13.	21196666	Varun Singh Longjam	59	75	40	43	68	66	351	58.50	79	
14.	21196667	Osa Chongshen Chang	46	45	23	AB	AB	53	167	27.83	38	
15.	21196668	Marpe Ango	33	65	22	26	33	49	228	38.00	45	
16.	21196669	Kadum Taga	30	44	25	25	44	50	218	36.33	46	
17.	21196670	Dighol Chakma	69	59	53	40	60	54	335	55.83	72	
18.	21196671	H. Donor Chakma	46	56	39	47	51	59	298	49.67	56	
19.	21196672	Ansh	43	66	34	37	73	57	310	51.67	74	
20.	21196673	Rakesh Singh	69	80	94	72	83	76	474	79.00	83	
21.	21196674	Anish Kumar	89	99	95	94	80	95	552	92.00	96	1 <sup>st</sup>
22.	21196675	Manoj Kumar Uraon	45	69	26	39	54	61	294	49.00	75	
23.	21196676	Chetnarayan Kumar Uraon	73	97	76	73	84	85	488	81.33	91	
24.	21196677	Roshan Uraon	52	68	48	51	59	58	336	56.00	75	
25.	21196678	Madhav Kumar	54	72	55	42	66	59	348	58.00	75	
26.	21196679	Akhilesh Mahto	70	84	83	69	91	93	490	81.67	91	
27.	21196680	Ansh Raj	74	93	88	73	80	89	497	82.83	95	
28.	21196681	Kunal Kar	58	70	40	37	70	68	343	57.17	52	
29.	21196682	Abhay Bhengra	43	68	39	43	55	61	309	51.50	66	
30.	21196683	Bharat Maida	72	80	39	50	66	66	373	62.17	87	
31.	21196684	Sanjay Maida	53	84	52	54	70	67	380	63.33	78	
32.	21196685	Tushar Kumar	56	71	44	50	74	71	366	61.00	73	
33.	21196686	Gyandev Nag	74	97	94	90	86	96	537	89.50	94	2 <sup>nd</sup>
34.	21196687	Nikhil Kumar	44	80	45	44	67	63	343	57.17	86	
35.	21196688	Anurag Kumar Pandey	75	86	85	82	87	72	487	81.17	93	
36.	21196689	Rahul Kumar Mahto	69	68	50	44	69	66	366	61.00	85	
37.	21196690	Ajit Kumar Singh	49	92	72	59	68	76	416	69.33	90	
38.	21196691	Aalok Kumar Singh	55	82	78	65	80	68	428	71.33	87	
39.	21196692	Sanoj Kumar	47	87	69	65	75	74	417	69.50	82	
40.	21196693	Neetish Marandi	59	84	65	43	76	67	394	65.67	83	
41.	21196694	Ayush Pandey	48	92	47	52	65	62	366	61.00	84	
42.	21196695	Bharat Mishra	47	53	37	41	52	57	287	47.83	66	
43.	21196696	Podang Tang Chakma	46	80	41	33	85	63	348	58.00	85	
44.	21196697	Robi	45	58	26	33	55	57	274	45.67	81	



26



सेवा

संस्कार

समरसता

समृद्धि



सेवा भारती

## सेवाधाम विद्यामन्दिर

दूरभाषः

प्रधानाचार्यः 7042782164

प्रबन्धक : 8588860846

वरिष्ठ माध्यमिक (आवासीय) विद्यालय

पोस्ट मंडोली दिल्ली – 110093

e-mail : sbsewadham@yahoo.com

दिनांक: 13/05/2024

## CBSE RESULT 2023-2024

## Class XII

## Arts Stream

S.No.	Roll No.	Name	English	Hindi	Pol.Sc.	Economics	Lib.& Info.Sc.	Sanskrit	Total (Best 5)	%	Position
1.	21679241	Sankit Shah	52	71	54	53	91	56	321	64.20	
2.	21679242	Vekuto Halfongbar	61	71	65	59	89	46	345	69.00	
3.	21679243	Saurabh	52	50	47	66	78	44	293	58.60	
4.	21679244	Monu	48	77	65	52	84	54	326	65.20	
5.	21679245	Rohit Sharma	58	70	50	64	84	57	326	65.20	
6.	21679246	Irolungbe Zeme	83	63	75	79	90	46	390	78.00	
7.	21679247	Aditya	45	76	63	51	78	46	313	62.60	
8.	21679248	Bhavishya Rawal	68	84	72	69	90	55	383	76.60	
9.	21679249	Vivek Kumar	60	88	77	84	94	53	403	80.60	
10.	21679250	Khaidem Deepak Singh	54	69	63	55	85	47	326	65.20	
11.	21679251	Amit Uraon	73	93	83	87	98	62	434	86.80	3 <sup>rd</sup>
12.	21679252	Damodar Machhuwa	81	94	95	89	99	80	458	91.60	1 <sup>st</sup>
13.	21679253	Akash Daulagupu	54	72	57	74	86	49	343	68.60	
14.	21679254	Babul Debbarma	64	67	68	67	87	45	353	70.60	
15.	21679255	Pankajdeep Basumatary	73	82	63	61	88	45	367	73.40	
16.	21679256	Kh. Farnandez Meitei	72	82	69	79	95	57	397	79.40	
17.	21679257	Kipeibe Zanme	74	74	74	76	89	48	387	77.40	
18.	21679258	Sameer Kumar Nayak	75	84	87	76	85	53	407	81.40	
19.	21679260	Akshay Kumar Mahto	63	92	74	75	88	70	392	78.40	

## Science Stream

S.No.	Roll No.	Name	English	Maths	Physics	Chemistry	Biology	I.T.	M.D.	Total	%	Position
1.	21679259	Arindam Mandal	50	49	50	51	--	84	--	284	56.80	
2.	21679261	Rahul Munda	76	--	51	52	58	--	92	329	65.80	
3.	21679262	Newclear Brahma	72	52	54	63	--	84	--	325	65.00	
4.	21679263	Prashant Pradhan	84	83	76	92	--	90	--	425	85.00	
5.	21679264	Sanjeet Kumar Bodra	80	80	69	88	--	94	--	411	82.20	
6.	21679265	Dilip Hansda	58	52	61	53	--	76	--	300	60.00	
7.	21679266	Ajit Kumar Choure	70	66	61	59	--	84	--	340	68.00	
8.	21679267	Saurabh Kumar Singh	86	90	62	77	--	83	--	398	79.60	
9.	21679268	Basant Oraon	73	83	73	96	--	95	--	420	84.00	
10.	21679269	Rahul Prajapati	65	80	73	66	--	98	--	382	76.40	
11.	21679270	Puneet Kumar Gautam	83	72	63	92	--	82	--	392	78.40	
12.	21679271	Prakash Lohra	70	58	60	70	--	81	--	339	67.80	
13.	21679272	Sachin Kumar Yadav	74	--	70	67	87	--	94	392	78.40	
14.	21679273	Hailunwangbe Newme	79	--	53	68	74	--	92	366	73.20	
15.	21679274	Lamstad Tang	78	--	61	72	78	--	95	384	76.80	
16.	21679275	Prakash Khongmawloh	67	--	61	81	69	--	93	371	74.20	
17.	21679276	Vishal Tomar	66	--	61	77	77	--	93	374	74.80	
18.	21679277	Anurag Shukla	84	--	69	94	94	--	97	438	87.60	2 <sup>nd</sup>
19.	21679278	Santosh Singh	65	--	61	68	80	--	93	367	73.40	

## Highest Marks (Subject Wise)

English	Hindi	Lib. & Info. Sc.	Pol. Sc.	Economics	Sanskrit	Maths	Biology	Physics	Chemistry	I.T.	M.D.
86	94	99	95	89	80	90	94	76	96	98	97

# अल्पायु में बड़े-बड़े काम

**कि**सी व्यक्ति की आयु, विद्या, धन, बल और पद का इतना महत्व नहीं है, जितना कि उसके साहस, उत्साह, ऊर्जा, बुद्धि चातुर्य और पूर्व संस्कार का। ऐसे ही व्यक्ति सफलता का वरण करते हैं, जिन्होंने अल्पायु में ही बड़े-बड़े काम कर दिखाए हैं :-

- स्वामी विरजानन्द 5 वर्ष की आयु में चेचक के कारण नेत्रहीन हो गए थे। आठ वर्ष की आयु में माता-पिता की मृत्यु हो गई। अपनी विद्या और तपोबल के आधार पर तत्कालीन संस्कृत व्याकरण के सूर्य कहलाए।
- जब स्वामी दयानंद 14 वर्ष के थे तब यजुर्वेद-संहिता, संस्कृत व्याकरण कंठस्थ कर ली थी। सच्चे शिव को जानने की जिज्ञासा बलवती हो गई थी।
- धार्मिक पुनर्जागरण के अग्रदूत रैदास, कबीर, तुलसी के गुरु स्वामी रामानंद ने 12 वर्ष की आयु में शास्त्रों की दीक्षा ले ली थी और गंगा तट पर तपस्या करने लगे थे।
- जगत गुरु शंकराचार्य ने 16 वर्ष की आयु में भारत के समस्त विद्वान पंडितों को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया था। आठ वर्ष की आयु में संन्यास लेकर वे सद्गुरु की खोज में निकले थे। 32 वर्ष की आयु में वैदिक धर्म की रक्षा की और ग्रंथों की रचना की।
- सिखों के दसवें गुरु गोबिन्द सिंह ने अपनी 9 वर्ष की आयु में अपने पिता गुरु तेग बहादुर को शहादत देने की प्रेरणा दी थी।
- महाराष्ट्र के प्रसिद्ध सन्त ज्ञानेश्वर 21 वर्ष की आयु तक जीवित रहे, लेकिन उनकी भक्ति का ज्ञान-भंडार जनमानस को आज भी उद्वेलित कर रहा है। 12 वर्ष की आयु में गीता पर मराठी छंदों में 'ज्ञानेश्वरी गीता' लिखी थी।
- कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इंग्लैण्ड के महाकवि शेक्सपीयर द्वारा लिखित 'मेकबेथ' नाटक का बंगला अनुवाद 14 वर्ष की आयु में किया था।
- भक्त नरसी मेहता 8 वर्ष की आयु तक गूंगे रहे। बाद में प्रसिद्ध सन्त कहलाए।
- गुरु गोविन्द सिंह के दो साहबजादे जोरावर सिंह और फतह सिंह जिनकी आयु क्रमशः 9 वर्ष और 7 वर्ष थी, जीवित ही दीवार में हंसते-हंसते धर्म रक्षार्थ चिन गए थे।
- झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने 9 वर्ष की अवस्था में शस्त्र व तलवार चलाना और घुड़सवारी करना सीख लिया था। 22 वर्ष 6 माह तक जीवित रहकर कौशल दिखाकर वह अमर हो गई।
- हरिसिंह नलवा 14 वर्ष की आयु में युद्ध-विद्या की कला में अद्भुत रणबांकुरे बन गए थे।
- 15 वर्षीय चन्द्रशेखर आजाद जब बनारस की संस्कृत पाठशाला में अध्ययन कर रहे थे, तभी असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े थे।
- रानी अहिल्याबाई ने 18 वर्ष की आयु में ही राजकाज अपने हाथ में ले लिया था।
- विश्व विजेता सिकन्दर ने 16 वर्ष की आयु में शोरोलिया का युद्ध जीत लिया था।
- भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू ने 13 वर्ष की आयु में 1300 पंक्तियों की एक अंग्रेजी कविता लिख डाली थी।
- गुरुनानक जी को 9 वर्ष की अवस्था में अपने शिक्षक मौलाना कुतुबुद्दीन से अधिक ज्ञान प्राप्त हो गया था।
- प्रसिद्ध नाटककार श्री हरिश्चन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपना प्रख्यात नाटक 'अबूहसन' 14 वर्ष की अवस्था में लिखा था।
- छत्रपति शिवाजी ने 13 वर्ष की आयु में तोरण का किला जीत लिया था।
- 13 वर्ष की अवस्था में सुभद्रा कुमारी चौहान को कविता लिखने का इतना प्रबल शौक था कि गणित की कापी में ही कविता लिख डालती थी।
- सरदार भगत सिंह ने 24 वर्ष की आयु में स्वयं शहीदी प्राप्त की।
- 11 वर्ष की अनुराधा पाल ने तबला वादक के रूप में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। □



## महाराणा प्रताप जयंती के कार्यक्रम



मंत्री श्री पन्नालाल ने उक्त बस्ती में कक्षा 6 से 10 तक में पढ़ने वाले बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने, बहनों को सिलाई व ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण व किशोरी विकास प्रकल्प के विषय में सेवाकार्य प्रारंभ करने की इच्छा जताई। कुछ युवाओं ने सेवा भारती के साथ जुड़ने की इच्छा व्यक्त की। दोनों प्रधानों ने आगामी वर्ष उक्त समारोह को विशाल व भव्य तरीके से मनाने का संकल्प किया। सेवा भारती दक्षिणी विभाग के मंत्री श्री विनोद श्रीवास्तव व जिला कार्यकारिणी सदस्य श्री विजय विश्वकर्मा उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में जिला सेवा टोली के सदस्य श्री प्रेमसिंह जी व कार्यकर्ता श्री उमेश जी का सहयोग रहा। कार्यक्रम की समाप्ति पर प्रसाद का वितरण हुआ।

### बदरपुर जिला

सेवा भारती दक्षिणी विभाग के बदरपुर जिले की ओर से महाराणा प्रताप जयंती समारोह 9 मई 2024 को प्रातः 8:00 से 9:00 बजे लोहार बस्ती, लालबत्ती टी प्वाइंट, लालकुआं एम बी रोड में गौरवमयी वातावरण में सम्पन्न हुआ। इसमें बस्ती के हर घर से अबाल, वृद्ध व तरुण उपस्थित हुए। प्रातःकाल से ही बस्ती में उत्सव का-सा माहौल था। कार्यक्रम स्थल की साफ-सफाई, जमीन पर बिछावन, धूपबत्ती व फूलों की सुगन्ध, बैनर व महाराणा प्रताप का सुन्दर चित्र कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे थे। बस्ती के दोनों प्रधानों श्री पप्पू जी व श्री संजय जी की उपस्थिति में कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। अतिथि व वक्ता दिल्ली प्रांत घुमंतू समाज कार्य सहसंयोजक श्री स्नेहकांत ने महाराणा प्रताप के जीवन व उनकी शूरवीरता पर प्रकाश डाला, तो नौजवानों ने तालियों द्वारा अपनी प्रसन्नता प्रकट की। विभाग संगठन

### उत्तरी विभाग

सेवा भारती उत्तरी विभाग में महाराणा प्रताप जयंती मनाई गई। सेवा भारती के सहयोग से गाड़िया लोहार समाज ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया। समाज के सदस्यों ने महाराणा प्रताप जी के अदम्य साहस और उनके अखंड भारत के प्रति समर्पण को याद किया। इस विशेष अवसर पर अन्य घुमंतू समाज के लोगों ने भी हिस्सा लिया। इन सभी का मार्गदर्शन अखिल भारतीय घुमंतू कार्य प्रमुख श्री दुर्गादास जी ने किया। उन्होंने महाराणा प्रताप जी के जीवन और उनकी वीरता के किस्सों पर एक व्याख्यान दिया। उनके चरित्र और नेतृत्व के महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला, जिससे उपस्थित जनसमूह अत्यधिक प्रेरित हुआ। दुर्गादास जी ने बताया कि गाड़िया लोहार समाज के लोगों ने अपना धर्म नहीं छोड़ा अपना धर्म बचाने के लिए इलाका छोड़ दिया और दूसरी बड़ी विशेषता





यह है कि पूरी दुनिया में ऐसा कोई समाज नहीं है जिसने अपनी पूर्व में की हुई प्रतिज्ञाओं को निभाने के लिए 400 वर्ष तक भटकने का जीवन स्वीकार किया हो। गाड़िया लोहार समाज, जो महाराणा प्रताप के अनुयायी माने जाते हैं, ने इस कार्यक्रम को और भी विशेष बना दिया। उन्होंने 4 किलोमीटर की रैली के माध्यम से महाराणा प्रताप जी के जन्मदिवस को और अधिक जीवंत कर दिया। कार्यक्रम में शामिल होने वाले सभी लोगों ने महाराणा प्रताप जी के आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लिया और उनके योगदान को सराहा। -प्रभाकर पाठक

### केशवपुरम विभाग

सेवा भारती केशवपुरम विभाग में 9 मई को महाराणा प्रताप जयंती मनाई गई। मायापुरी की गाड़िया लोहार बस्ती में आयोजित इस कार्यक्रम में गाड़िया लोहार समाज के प्रधान मौसमी जी एवं उप प्रधान राज्ञा जी का महाराणा प्रताप स्मृति चिन्ह देखकर सम्मान किया गया। प्रांत से डॉ. ए.एन. राय जी ने महाराणा प्रताप जी के बारे में बहुत ही अच्छी जानकारी दी। संघ से नगर संघचालक राजकुमार तुली जी ने भी महाराणा प्रताप जी के बलिदान की याद दिलाई एवं लोकतंत्र पर्व पर बात भी की। बस्ती के बच्चों ने गीत एवं बांसुरी वादन और जयघोष कार्यक्रम किया। उमा शर्मा जी ने भी सुन्दर गीत प्रस्तुत किया। मालवीय मिशन से मृत्युंजय महादेव संघ एवं सेवा भारती के कार्यकर्ता कार्यक्रम में उपस्थित थे। कार्यक्रम बहुत ही सुन्दर एवं सफल रहा।



### मोती नगर जिला

गत 9 को महाराणा प्रताप जयंती का आयोजन गाड़िया लोहार बस्ती कैलाश पार्क में किया गया। मुख्य वक्ता विभाग मंत्री श्री रामसेवक जी रहे। बस्ती के कार्यकर्ताओं ने भी

अपने विचार रखे। प्रमुख जी का स्वागत किया गया। संख्या लगभग 40 की रही।

### तिलक जिला



गत 9 मई को लुहार बस्ती, ख्याला, विष्णु गार्डन में सेवा भारती द्वारा महाराणा प्रताप की जयंती धूमधाम से मनाई गई। श्री संत कुमार जी, विभाग घुमंतू समाज के संयोजक वक्ता ने महाराणा प्रताप की वीर गाथा सुनाई। बस्ती के प्रधान को चित्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में 58 संख्या रही। कार्यक्रम में विष्णु गार्डन के माननीय संघचालक जी भी उपस्थित रहे। जिला मंत्री विनोद गुप्ता जी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

### सरस्वती विहार जिला

सरस्वती विहार जिले के आनन्दवास तथा पीतमपुरा में निवासरत लोहार समाज के साथ सामूहिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वक्ता श्रीमान सुदर्शन जी रहे। इनके अतिरिक्त कार्यक्रम में श्री प्रबुद्ध मिश्रा तथा विभाग से सह जिला मंत्री मनोज शर्मा जी रहे। गाड़िया लोहार समाज द्वारा महाराणा प्रताप जी के काल में किए उपकार के लिए सम्मानित किया गया। संख्या 60 की रही।





## यमुना विहार विभाग

दिनांक 9 मई 2024 को वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयंती समारोह यमुना विहार विभाग गोकलपुर गांव के एमसीडी पार्क में मनाई गई। इसमें गाड़िया लोहार की बस्तियां से भी लोग आए। मुख्य वक्ता थे संघ के वरिष्ठ प्रचारक और घुमंतू सेवा प्रमुख श्रीमान दुर्गा दास जी। श्रीमान राजवीर जी दिल्ली प्रांत संयोजक एवं श्रीमान स्नेह कांत जी सहसंयोजक प्रांत ओमवीर जी विभाग संयोजक यमुना विहार व महेंद्र सोलंकी जी और विवेक जी की उपस्थिति रही और साथ ही सेवा भारती की तरफ से श्रीमान गवेन्द्र जी, रामप्रकाश जी राजेंद्र जी, दिलेर सिंह जी व समाज के अन्य लोग शामिल रहे। जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाया गया और गाड़ियां लुहारों के कुछ प्रमुख लोगों ने भी महाराणा प्रताप के जीवन



के बारे में जानकारी दी। उन्होंने अपने 500 साल से कई पीढ़ियों के बारे में किस किस तरह सड़कों के किनारे रहकर जीवन जिया और आज भी दयनीय जिंदगी जी रहे हैं। इनके जीवन में बदलाव हो घुमंतू सेवा कार्य के माध्यम से भरसक प्रयास किया जा रहा है।

## कन्या छात्रावास का शुभारंभ



सेवा भारती माता जीवनी बाई कन्या छात्रावास का शुभारंभ 3 जून को हुआ। प्रांत से संगठन मंत्री श्रीमान शुकदेव जी और अखिल भारतीय

छात्रावास कार्य प्रमुख जयदेव दादा जी रहे। साथ ही प्रांत के और अन्य विभागों के भी वरिष्ठ कार्यकर्ता उपस्थित रहे। यमुना विहार विभाग से भी सभी जिलों के कार्यकर्ताओं का सहयोग मिला। विशिष्ट अतिथि श्रीमान सीताराम जी, माननीय विभाग संघचालक श्रीमान अरूण जी, विभाग प्रचारक श्रीमान श्रवण जी और सेवा भारती के विभाग अध्यक्ष डॉ. अरविंद जी का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। विशेष अतिथि के रूप में गुरु मां वीना महाजन जी रहीं, जिनके कई गुरुकुल चलते हैं। कार्यक्रम का प्रारम्भ हवन से हुआ। उसके पश्चात बच्चों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया तत्पश्चात श्रीमान शुकदेव जी, जयदेव दादा जी, और सीताराम जी ने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया। कार्यक्रम के अंत में माननीय विभाग अध्यक्ष श्रीमान डॉ. अरविंद गुप्त जी ने अपना आशीर्षक दिया। जिले के सभी कार्यकर्ताओं ने विशेष रूप से जिला मंत्री श्रीमान भीम सिंह जी श्याम सुंदर जी, भुवन जोशी जी, हरबंस जी और अन्य कार्यकर्ताओं का सहयोग रहा और रेखा जी, अनीता जी, भारती जी और अन्य बहनों ने बहुत मेहनत की और कार्यक्रम को सफल बनाया।

## उत्तम नगर जिले के समाचार



गत 9 मई को उत्तम नगर जिले के सभी केन्द्रों पर शूरवीर महाराणा प्रताप जयंती मनाई गई। इस अवसर पर बच्चों को महाराणा प्रताप जी के जीवन पर आधारित महत्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी दी गई। गाड़िया लोहार वर्ग के समर्पण पर चर्चा हुई और अंत में प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उत्तम जिले के शिवानी केन्द्र पर 27 मई से इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स एक माह के लिए प्रारंभ किया गया। इस कार्य को जिला महिला समिति की कार्यकर्ता श्रीमती अलका पांचाल जी ने शुरू किया। इसके अतिरिक्त आर्ट एंड क्राफ्ट की कक्षा निरीक्षिका श्रीमती रंजना जी के प्रयास से प्रारंभ हुआ। साप्ताहिक संस्कार के प्रकल्प के रूप में हर मंगलवार को भजन कीर्तन के साथ श्री हनुमान चालीसा पाठ/सुन्दर काण्ड पाठ शिवानी केन्द्र पर नियमित चल रहा है। इस कार्य में जिला कार्यकारिणी के अतिरिक्त विभाग से श्री अनिल निगम जी व श्री राजीव बतरा जी तथा प्रांत से श्री राजेंद्र तिवारी जी का सहयोग मिलता रहता है। निकट भविष्य में इस कार्य को बढ़ाने और कुछ अन्य केन्द्र खोलने की योजना है।



## दत्तक ग्रहण समारोह

सेवा भारती मातृछाया, यूनिट 2, मियाँवाली नगर, दिल्ली के तत्वावधान में बेसहारा बच्चों के कल्याण और उनके पुनर्वास के लिए चलाई जा रही एक परियोजना है। जिन बच्चों को उनके माता-पिता किसी भी कारण से छोड़ देते हैं, उन्हें मातृछाया में अपना नया घर मिलता है। मातृछाया, भारत सरकार के केंद्रीय दत्तक ग्रहण संसाधन प्राधिकरण के साथ एक पंजीकृत परियोजना है। मातृछाया बेसहारा बच्चों के पालन-पोषण के लिए भारत सरकार द्वारा बनाए गए नियमों और विनियमों का पालन करती है और बाद में गोद लेने के माध्यम से नया घर खोजने में सहायता करती है।

12 मई 2024 को एक बच्ची, पाँच वर्षीय अंकिता (बदला हुआ नाम) का गोद लेने का समारोह मातृछाया परिसर में हुआ। दक्षिण भारत के धन्य दम्पति को औपचारिक दत्तक ग्रहण समारोह में बच्ची सौंप दी गई। इस दत्तक ग्रहण समारोह में लगभग 50 अतिथियों ने भाग लिया। अतिथियों की सूची में दो दम्पति ऐसे भी थे, जिन्हें पहले ही मातृछाया मियाँवाली परियोजना से गोद



लेने का लाभ मिल चुका है। औपचारिक समारोह में मातृछाया प्रमुख श्री योगेश गर्ग ने परियोजना का परिचय दिया तथा मातृछाया परियोजना की यशोदा एवं अन्य कार्यकर्ताओं का परिचय भी कराया। मातृछाया एवं शिशु वाटिका के बच्चों ने अपनी प्रभावशाली प्रस्तुतियाँ दीं। मातृत्व के भावपूर्ण गीतों से पूरा वातावरण भावुक हो गया। दम्पति और बच्ची दोनों ही धन्य महसूस कर रहे थे।

इस अवसर पर मातृछाया के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों में मिली-जुली भावना थी; लगभग 5 वर्ष से पाली-पोसी हुई बच्ची से बिछड़ने का दर्द और बच्ची को स्नेही माता-पिता

मिलने की खुशी, जो उसके उज्वल भविष्य को सुनिश्चित करेंगे। यह छोटी सी प्यारी बच्ची सिर्फ 5 महीने की थी, जब वह हमारे घर, सेवा भारती मातृछाया, मियाँवाली में आई थी। यह एक तस्करी का मामला था और उसे पुलिस ने बचाया था। भाग्य ने अपनी भूमिका निभाई और वह भाग्य से मातृछाया में आ गई। इसके बाद सभी यशोदाओं के अपार देखभाल और समर्थन से अंकिता सभी नैतिकता और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ एक सुंदर लड़की के रूप में बढ़ने लगी। उसने अपने साथ के बच्चों के साथ रहना सीखा। वह अपने से छोटे बच्चों से बहुत प्यार करती थी। वह उसी परिसर में शिशु वाटिका कक्षा में जाने लगी। वह क्रियाशील होकर कविताएँ सुनाती थी और हमेशा अनुशासन में रहती थी। अंततः उसे दक्षिण भारत के एक दम्पति द्वारा गोद लेने की प्रक्रिया में चुना गया। जैसे ही यह खबर उसके पास पहुँची, वह बहुत उत्साहित हो गई और उसने उज्वल भविष्य के साथ अपने नए घर और नए माता-पिता के पास जाने के लिए अपनी सहमति दे दी। भगवान उसे जीवन में सभी खुशियाँ प्रदान करें। □

## गांधीनगर में ग्रीष्मकालीन शिविर

गत 30 मई को गांधीनगर जिले के हेडगवार भवन में बच्चों के लिए ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित हुआ। इसमें योग, फन एक्टिविटी, डांस क्लास और इंग्लिश स्पीकिंग क्लास रही। बच्चों को घड़ी में समय देखना बताया गया। चेस और कैरम भी खेलना सिखाया गया। विभाग से सहमंत्री रुचि जी और जिले से बहन समिति अध्यक्ष सविता जी रहीं। शशि जी और सोनिया जी वैष्णवी ने क्लास ली। रोज की तरह बच्चों को रिफ्रेशमेंट भी दी गई।





# आत्म दीपो भव

■ इंदिरा मोहन

यह सांस्कृतिक मूल्यों के पुनर्जागरण का समय है। विकास और विश्वास की आस्था ऊर्जा दे रही है। समाज अपनी समस्याओं के प्रति जागरूक है। समाधान के लिए विरासत के प्रति विश्वास, युग धर्म और युग दृष्टि को आकृष्ट कर नारी को निर्भय बना रहा है, अपने दम पर खड़े होने का साहस दे रहा है। अनेक युगों से नारी के सामने ऐसा मुक्त तथा व्यापक क्षितिज नहीं आया जैसा आज है, या निकट भविष्य में होने की संभावना है। उसके पास शिक्षा है। विस्तृत कर्म क्षेत्र है। भौतिक सुख-सुविधाएं भी हैं। विभिन्न पदों में कार्यरत रहते हुए उसका मनोबल बढ़ा है, आत्मविश्वास जागा है।

कभी बेटियों की भागीदारी सांस्कृतिक आयोजनों तक सीमित थी। अब उनके लिए तीनों सेनाओं सहित विभिन्न क्षेत्रों को खोल दिया गया है। अब वे जल, थल, नभ और अंतरिक्ष में भी अपनी क्षमता का लोहा मनवा रही हैं। इसरो के चन्द्र और सूर्य अभियानों में महिला वैज्ञानिकों की महती भूमिका किसी से छिपी नहीं है। जैसे-जैसे कर्मक्षेत्र की लक्ष्मण रेखा मिटती जाती है वैसे-वैसे वह नवीन कर्तव्य संभालने की योग्यता प्राप्त करती जाती हैं। हर परिवार के लिए अतिरिक्त आय का स्रोत खुल गया है। देश की सम्पन्नता में अभिवृद्धि हो रही है।

विकास की इस दौड़ में हमने भौतिक सुख-साधन तो पा लिए

किन्तु अर्थकेन्द्रित व्यक्तिवादी सोच ने अनेक आधे-अधूरे सवाल खड़े कर दिए हैं जिनकी जकड़न में पति-पत्नी और बच्चे ही नहीं घुट रहे, बुजुर्ग माता-पिता भी अकेलेपन और उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं। जिस गति से और जिस दिशा में प्रौद्योगिकी का विस्तार हो रहा है वह धरती और मनुष्यता के लिए खतरा बनता जा रहा है। इतना ही नहीं आपसी संवाद और सामाजिकता का भाव प्रश्न के घेरे में है। मोबाइल, आईफोन और इंटरनेट आदि आज सबको हर समय अपने में उलझाए रहते हैं। बाहर और भीतर के कोलाहल हमें खुद को भी सुनने नहीं देते, न सोचने का अवकाश देते हैं और न शरीर एवं मन को विश्राम। जीवन की गुणवत्ता घट रही है। अब हिंसा, भ्रष्टाचार, दुष्कर्म, अपराध हमारी संवेदना को आहत नहीं करते। तमाम विसंगतियां हमें आइना दिखाने लगी हैं। बाजारवाद, उपभोक्तावाद तथा काम के रूप में फ्री-सेक्स, मेरी देह मेरा अधिकार, नारी-मुक्ति अर्थात् पुरुषों से मुक्ति का नारा बुलंद हो रहा है। अर्थ के युग में बाजार ने कामिनी रूप को मोहनी बना दिया है जिसे हमारा मीडिया महिमा मंडित कर रहा है। विवाह संस्था, समलैंगिकता, लिव इन रिलेशनशिप, कन्या भ्रूण हत्या आदि मुद्दों पर खुली बहस की जरूरत है।

हमारे देश में एक ऐसा वर्ग भी पनप रहा है जिसके अनुसार- “आज

विवाह प्रथा खतरे में है, आप संयुक्त परिवार की बात कर रहे हैं। नैतिक मर्यादाएं तो बंधन हैं और समझदार कभी बंधन स्वीकार नहीं करता।” अपने तर्क के पक्ष में वे अमेरिका और यूरोप का गुणगान शुरू कर देते हैं। उन्मुक्त जीवन शैली के उदाहरणों से समाचार पत्र भरे हुए हैं। महानगरों की यह बीमारी गांवों में भी फैल रही है। ऐसे परिवारों में बड़े होते बच्चे अवसाद, भय, हताशा और अकेलेपन जैसी मानसिक व्याधियों से जूझ रहे हैं। संयुक्त परिवार के टूटने का खामियाजा बूढ़ों और बच्चों को भुगतना पड़ रहा है।

जरा सोचिए! वर्तमान हालातों में इन सभी घटनाओं का सबसे बड़ा नुकसान किसे है? मानसिक असुरक्षा, भीतरी तनाव से पीड़ित कौन है? यह कैसी आधुनिक क्रांति है जिसमें स्त्री ही विषय, स्त्री ही मोहरा बनती जा रही है। अपनी असली अस्मिता की पहचान छोड़ स्त्री-पुरुष प्रतिद्वंद्विता को ही अपना लक्ष्य बना बैठी है। जैसे हाथ से छूटी गेंद सीढ़ियों पर नीचे गिरती ही चली जाती है, वैसे ही आरम्भ की असावधानी जीवन भर के विघटन का, असंतुलन का कारण बन रही है। तमाम विसंगतियां आज हमें आइना दिखाने लगी हैं।

इस समस्या के लिए पश्चिम देशों को उलाहना देने से कुछ न होगा। इस विषय में न्यायालय और सरकार





का हस्तक्षेप भी कुछ विशेष नहीं कर पायेगा। यहां तो स्वयं की सावधानी, स्वयं की जागरूकता चाहिए। आधुनिकता का अर्थ जीवन मूल्यों का त्याग नहीं, उनका संवर्धन है। इस सनातन सत्य का साक्षात्कार ही हमें वर्तमान के चुनौतियों से बाहर निकाल सकता है। स्त्री-पुरुष दो वर्ग बनकर संघर्षरत रहेंगे तो समाज को संस्कार कौन देगा? सार्थक बदलाव कौन लाएगा? संसार में शांति कैसे स्थापित होगी? आतंकवाद, हिंसा की काट सोचे बिना पारिवारिक-सामाजिक सुरक्षा कैसे मिलेगी? वर्तमान स्थितियां इन प्रश्नों का उत्तर चाहती हैं।

सामर्थ्य समग्रता से आती है - केवल नारी अथवा पुरुष बनने से नहीं। अधूरा देखना अथवा केवल एक पक्ष को देखना रोगा का लक्षण है। स्त्री-पुरुष का मूल भेद शरीर आकृति के आधार पर है, आत्मा के आधार पर नहीं। इसलिए शरीर प्रधान दृष्टिकोण न रख कर हमें आत्मा का दृष्टिकोण बनाना होगा। जो सबको देखेगा वह पूरे ब्रह्माण्ड में छिपी एकता को देखेगा। यह एकता ही सत्य है, सत्य ही सौंदर्य है। यह सोच जितनी व्यापक होगी उतनी ही दोनों के बीच की असमानता दूर होती जाएगी। जो काम पुरुष शक्ति तांडव द्वारा करता है महिलाएं उसे सहज स्नेह, सरलता और सौम्यतापूर्वक कर लेती हैं- सच पूछिए तो सर्वदा शीतल होकर बहनेवाली धारा मां है जो गर्म होना जानती ही नहीं।

नारी प्रकृति का ऐसा रूप जो करुणामय है। जैसे मिट्टी का गुण फलों, सब्जियों और अनाजों में आ जाता है वैसे ही नारी की ममता

और करुणा का प्रभाव संतान में आना स्वाभाविक है। संतान अपनी मां के शरीर और मन का एक अंश लेकर जन्मता है। व्यक्ति की नींव को तैयार करनेवाला तत्व है उसकी निष्ठा और संस्कार, जिसे मां का आत्मबल, चरित्रबल और तपबल ही बनाता है और फलित करता है। यह शक्ति आती है पवित्रता से, सात्विकता से, सहनशक्ति और धैर्य से। केवल बुद्धि और तर्क से यह आत्मबल संभव नहीं। आत्मबल एक नदी की भांति है जो अपने बहाव द्वारा नवीन दिशाओं में अपनी राह बना लेता है। डॉ. राधाकृष्णन ने ठीक ही कहा है, “नारी पुरुष के विलास का माध्यम नहीं है। वह पुरुष की मां है और मानव के विकास का साधन है।” साध्वी ऋतभरा कहती हैं कि भारतीय धर्म संस्कृति में नर से नारायण बनने की पूरी प्रक्रिया की संभावना मां की गोद से शुरू होती है। मां सृष्टि की सृजनशक्ति है। हमें यह याद रखना होगा कि यह विश्व परिवारों का परिवार है। यदि परिवार की मूल इकाई न रही तो कैसा समाज? कैसा राष्ट्र, कैसा ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’?

उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएं मात्र भौतिक प्रगति पर निर्भर नहीं हैं। संकल्प का भटकाव दो स्तरों पर असंतुलन का कारण बन रहा है - एक स्तर है परिवार और दूसरा स्तर है राज्य। इसके लिए चरित्रवान और कर्मनिष्ठ प्रखर व्यक्तित्व की आवश्यकता है। समाज की श्रेष्ठ परंपराओं को पोषित भी करना है और घातक परंपराओं का

उन्मूलन भी करना है। अतः शांति और समाधान के लिए स्त्री-पुरुष दोनों का समन्वित भूमिका निभानी हागी अन्यथा समाज की विकृतियां समाजिकता के प्राणरस को सुखा देगी।

यह काम आसान नहीं पर मातृशक्ति को जगा कर सम्भव किया जा सकता है। माता है निर्माता- वही समाज का धारण, पोषण और संवर्धन करती रही है। वह परिवार का प्राण है, परिवार की शोभा है। प्राणिमात्र के दुख-दर्द को समझने, स्वार्थ को परमार्थ में ढालने का चिंतन पुरुष को नारी ने ही दिया है। हमारे यहां दुर्गा शक्ति की प्रतीक है- शक्ति की इतनी सुंदर कल्पना अन्यत्र कहीं नहीं हुई। उसके चैतन्य तत्व को जगाने की जरूरत है। हमारा गौरव शरीर को सजाने में, रूप अथवा भोग परायण बनने में नहीं वरन् शक्ति, सरस्वती और साध्वी बनने में है। वर्तमान अपसंस्कृति के चौतरफा हमले को, अपने संस्कारों की ढाल से रोका जा सकता है। अन्य देशों की तुलना में हमारे जीवन-मूल्य भिन्न हैं, हमारे संस्कार भिन्न हैं। हमारी जीवन्त सांस्कृतिक विरासत में बहुत कुछ बचा रह गया है। हमें अपने संस्कारों के साथ आधुनिक होना है। यह याद रखना है कि हम कहां से आये हैं और कहां तक जाना है।

यह देश अपने बुद्धि कौशल और सर्वसमावेशी चिन्तन से याज्ञवल्क्य को चकित कर देनेवाली गार्गी की परंपरा का देश है। जनक के ज्ञान-अहंकार को परास्त कर देने वाली ब्रह्मवादिनी सुलभा का देश है। यहां माताएं सत्य को जीती हैं, सत्य को ही धारण करती रही हैं।



परमसत्य को जानने की अभिलाषा रखते हुए सत्यकाम ने अपनी मां से कहा- मां! गुरु आश्रम जाकर वेदों का ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ, मेरा गोत्र क्या है? पुत्र में ज्ञान की जिज्ञासा देखकर मां प्रसन्न हुई। सहज भाव से कहने लगी, पुत्र! गोत्र के संबंध में, मैं स्वयं ही अज्ञानी हूँ। युवावस्था में ही तू मुझे प्राप्त हुआ, मैं गृहकार्य और सेवा सत्कार में ही व्यस्त रही। अचानक तेरे पिता की मृत्यु हो गई। गोत्र के बारे में तुम्हारे पिता से पूछ ही नहीं पाई। जब गुरु तुमसे गोत्र पूछें तब तुम उन्हें मां का नाम 'जाबाला' बता देना और कहना मैं सत्यकाम जाबाला हूँ, मेरी माता केवल इतना ही जानती है।

खुशी और उत्साह से भरा बेटा गौतम ऋषि के आश्रम पहुंचा। मां की

बात ज्यों की त्यों कह दी। सत्यकाम की सत्यवादिता और निश्चलता से आचार्य प्रसन्न हुए, कहने लगे- जाओ, वन से लकड़ियां इकट्ठा करके लाओ, मैं अभी तुम्हारा यज्ञोपवीत करूंगा। तुम्हें शिष्य के रूप में स्वीकार करता हूँ। ब्रह्मतेज से युक्त सत्यकाम भी अपने गुरु गौतम की भांति ऋषिकुल में प्रतिष्ठित हुआ। - छांदोग्य उपनिषद्।

काल चक्र बदल रहा है। हम समर्थ, सक्षम, भव्य भारत के निर्माण की सौगंध ले चुके हैं। हमें अपने स्व को जगाना है। स्वबोध के रूप में जो शक्ति पहले से विद्यमान है उसको ही जीवन्त, ज्वलंत और जाग्रत करना है - यही स्व की व्यापकता है। इस तप के लिए वस्तुओं पर नहीं अपने मन पर स्वामित्व पाना होगा। संकल्प से

सिद्धि होती है। हमें 'आत्मदीपो भव' के उद्घोष के साथ स्वयं सशक्त होना है। अपनी बेटियों को भी बुद्धि से, बोध से, आचरण से सशक्त बनाना है, तभी वे सत्य और धर्म की पक्षधर होकर समाज को प्रभावित कर सकेंगी। उनकी आस्था और विश्वास का दीपक इस प्रकार असंख्य दीपों का ज्योतिरित कर आलोक से आलोक की यात्रा कर सकेगा। यही नारी का दायित्व है। यही नारा की परिपूर्णता है।

पुत्र के कुपुत्र होने पर ही वह कुमाता नहीं होती। वह तो पुरुष की जननी है। समाज की संस्कार शक्ति है, सृष्टि की रचनात्मकता है। भारतीय चेतना सदा से उसे नमन करती रही है-  
**या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिति।  
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः॥**

# BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.



**Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires**  
(Black and Galvanised)

**Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires**  
(Black and Galvanised)

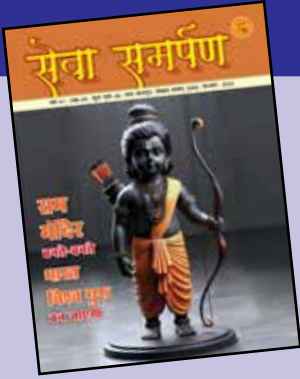
**H.B. HHB & G.I. WIRES**

**Bansal Wire Industries Ltd.**

F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)

Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93

Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com



## विज्ञापन के लिए आग्रह

'सेवा समर्पण' पत्रिका समाज एवं संस्कृति के प्रति समर्पित, प्रतिष्ठित वर्ग, कार्यकर्ता एवं युवा वर्ग के बीच पिछले 41 वर्ष से 'नर सेवा-नारायण सेवा' के मूल मंत्र को लोकप्रिय बना रही है। इस पत्रिका द्वारा परिवार प्रबोधन, भारतीय जीवन शैली और संस्कारों से युक्त समसामयिक विषयों के साथ-साथ बच्चों, युवा वर्ग एवं महिलाओं संबंधी विषय सामग्री के द्वारा स्वावलम्बन, शिक्षा और संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाने का विशेष कार्य हो रहा है। समय-समय पर किसी एक बिन्दु को केन्द्रित कर विशेषांक निकालने की योजना रहती है।

आपसे प्रार्थना है कि अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन प्रकाशित कराएं और 50,000 पाठकों तक अपनी पहुंच बनाएं। यह पत्रिका सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, पुस्तकालय, व्यापारी वर्ग, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, अन्य गैर-सरकारी संगठनों, अस्पताल इत्यादि स्थानों पर जाती है।

संपर्क करें- सेवा भारती, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

फोन - 011-23345014-15

## समस्याओं के समाधान का केन्द्र

अप्रैल 2010 में रघुवीर नगर के श्री राम मन्दिर में प्रसन्ना सलाह केन्द्र की शुरुआत की गई। सलाह केन्द्र के प्रारंभ करने का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों तथा परिवारों की सहायता करना है जो मानसिक, पारिवारिक तथा व्यक्तिगत समस्याओं से ग्रस्त हैं। कार्यकर्ता बहनें उनकी समस्याओं को सुनकर, उनका समाधान करने की कोशिश करती हैं। वार्तालाप करके उन्हें उचित मार्गदर्शन देती हैं। आज यह केन्द्र अनेक लोगों के लिए समस्या निवारण एवं भविष्य में सुखी जीवन के लिए वरदान से कम नहीं है। उचित परामर्श एवं समस्या समाधान के लिए निम्न स्थान पर वर्णित समयानुसार सम्पर्क कर सलाह पायें समाधान मिटायें-

### स्थान

राम मन्दिर, रघुवीर नगर, ( वीरवार- प्रातः 11 00 से 1.00 बजे )

बी-2/2, मियाँवाली नगर, नई दिल्ली-110087 ( शुक्रवार- प्रातः 11.00 से 1.00 )

सम्पर्क सूत्र- श्रीमती पायल बंसल ( मो. 9650746668 )

## उत्कर्ष केंद्र पर चिकित्सा शिविर

सेवा भारती अपने उत्कर्ष केंद्र के माध्यम से प्रत्येक रविवार को समाज की जरूरत के हिसाब से और सामाजिक समरसता के लिए उत्साहजनक कार्य करती रहती है। इसी क्रम में करोलबाग जिले में स्थित उत्कर्ष केंद्र पर 28 अप्रैल को चिकित्सा शिविर आयोजित हुआ। इसमें 178 से अधिक लोगों ने भागीदारी की और 30 से अधिक लोगों ने आंखों की जांच कराई। सबसे अच्छी बात यह रही कि कुछ कॉलेज विद्यार्थी सेवा और सहयोग के लिए आए। ऐसे ही 5 मई को भी चिकित्सा शिविर लगाया गया। इस अवसर पर 165 मरीज देखे गए और ने 25 से अधिक लोगों ने आंखों की जांच कराई। □



## "AGARWAL PACKERS AND MOVERS LTD." (नर सेवा - राष्ट्र सेवा)



Dudu, Rajasthan - 06-09-2012

### **Nindra Daan Kendra for Truck Chaalak**

(A Unique Concept to reduce Accidents on Roads by Trucks)

(ट्रक ड्राईवर देश का आंतरिक सिपाही है)

- 4,12,432 accidents happened yearly in India.
- Out of these accidents 1,53,972 lost their lives.
- Our Kendra saving 21 lives monthly on road to avoid sleep deprivation and stress.
- Empowering Drivers with respectful environment to provide them sound sleep with safe and secure parking space along with free barber, washroom facilities and all are free.



Bethal - 06-04-2021

### **Pran Vayu Vahan**

(कोविड के समय चल चिकित्सा)

- Modified trucks into "Oxygen Providers Van" during highest peak of COVID -II.
- Container converted into clinic within 24hrs.
- It is equipped with all facilities i.e. Oxygen cylinder, Beds, Oxygen Concentrator etc.
- Saved 543 Lives to provide Oxygen to highly vulnerable patients in association with Sewa Bharti.



Raman Jayanti - 2501 Nalwa, Hisar

### **Community Empowerment**

(सामाजिक समरसता और अंत्योदय का जीवंत उदाहरण)

- Reducing inequalities to provide access to socially backward people to build temple of Sant Shiromani Kabir Ji Maharaj in Nalwa (Hisar) for their Spiritual well beings.
- Providing livelihood and skills to differently abled and financially backwards.
- Girl empowerment.
- Education to highly vulnerable children from villages and tribes.
- Adopted approach to reduce Carbon Emission to conserve environment.

09 300 300 300

www.agarwalpackers.com